आलौकीक रतन प्रकाश

अर्थात्

ूज्य श्री रतनचन्द्र जी म० का जीवन चरित्र

और

ूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज की सम्प्रदाय की पट्टावली

लेखक

आचार्य गुरुदेव पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज के शिष्य पं० स्वामी श्री ज्ञान चन्द्र जी महाराज के शिष्य मुनि श्री खुशहाल चन्द्र जी महाराज

प्रकाशक

चौधरी हीरालाल जी बाबूराम जी राजकुमार जी हंसराज जी जगदीशराय जी जैन चरखी दादरी

लाला यशवन्त सिंह जैन मीखी वाले

तथा अन्य धर्म प्रेमी दानी महोदय

ागवान श्री महावीर स्वामी
निर्वाण सम्वत् २४९५
आचार्य श्री मंगलसेन जी
महाराज स्वर्गवास सम्वत् ४९

विक्रम सम्वत् २०२६

ईस्वी सन् १९६९ मई

आचार्य पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज
स्वर्गवास सम्वत् ९

पूज्यनीय गुरुदेव पं० स्वामी श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज स्वर्गवास सं० १६

अलौकीक रतन प्रकाश

अर्थात्

पूज्य श्री रतनचन्द्र जी म० का जीवन चरित्र

और

पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज की सम्प्रदाय की पट्टावली

लेखक

आचार्य पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज के शिष्य पं० स्वामी श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज के शिष्य मुनि श्री खुशहाल चन्द्र जी महाराज

प्रकाशक

चौधरी हीरालाल बाबूराम राजकुमार हंसराज जगदीशराय जैन चरखी दादरी लाला यशवन्त सिंह जैन भीख''वाल,

तथा अन्य धर्म प्रेमी दानी महोदय

भगवान श्री महावीर स्वामी निर्वाण सम्वत् २४६५
आचार्य श्री मंगलसेन जी महाराज स्वर्गवास सम्वत् ४६

विक्रम सम्वत् २०२६
इस्वी सन् १९६९ मई

श्री पूज्य रघुनाथ जी महाराज स्वर्गवास सम्वत् ६

पूज्यनीय गुरुदेव पं० स्वामी श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज स्वर्गवास

द्रव्य सहायक दाताओ के दान की सूची

२००) लाला यशवन्तसिंह जैन भीखी वाले हाल भटिंडा।
१११) लाला तिलोकचंद सुशील कुमार जैन शक्ति नगर २४/४ देहली,
१११) चौधरी हीरालाल हंसराज जैन चरखी दादरी,
१११) श्री महावीर आभूषण भण्डार चांदनी चौक देहली,
१११) जुगमंदर दास पालीराम जैन श्यामडी वाले हाल देहली,
१११) लाला लालजीमल मौजीराम गोंची वाले चावडी बाजार देहली,
१११) लाला जम्बूप्रसाद दर्शन लाल जैन शक्ति नगर १८/२२ देहली
१०१) लाला सीशराम घनश्याम दास जैन श्यामडी वाले हाल देहली
५१) मनोहर लाल मामनचन्द जैन श्यामडी जा व मोलिया खान देहली
५१) हरदेवसहाय माधुराम जैन श्यामडी वाले चावडी बजार देहली
५१) पटवारी कृष्णकुमार जैन मु० खूबडू जिला रोहतक
५१) मांजाराम जैन रायमहेडा वाले चावडी बाजार देहली,
३१) लाला प्यारेलाल घोडी वाले नया बास देहली
२१) विमला देवी जैन श्यामडी वाली धर्म पत्नी लाला अतरसेन जैन राजा मंडी वाले हाल शीशी कोलोनी देहली
२१) रामकुमार जैन जमालपुर वाले सेरा काठी सब्जीमंडी देहली,
२१) लाला रामेश्वर दास जैन काछवा वाले शक्ति नगर देहली,
२१) रोशन लाल दुगड सुपुत्र वैद्य कस्तूरी लाल जैन देहली
२१) सुरजभान जाखोलीवाले सब्जीमंडी २१) परजनकुमार जैन बिटमडा वाले ११) ओम प्रकाश जैन पीपली खेडा वाले (११)लाला गोरधन दास हरीचन्द जैन इसराना जि० करनाल, ११) बरनावर पुर वाले एक सज्जन ११) हुकमचंद जैन भीझागगढी १०)चंदरी देवी धर्म पत्नी चौ० दयाचन्द पीपलीखेडा १०)लालचन्द जैन सराय रहला, (५) लाला सुरजनमल जैन ५) रघुनाथसहाय जैनमुहाना वाले ५) लाला भगतसिंह जैन झीझारा गढी वाले पहाडी धीरज देहली और भी जिन जिन सज्जनोने इस पवित्र पुस्तक की छपाई में सहायता दी है मैं उन सबको धन्यवाद देता हू।

आप सर्व सज्जनों का हितैषी

रामकुमार जैन सब्जी मंडी देहली

लेखक का वक्तव्य

प्रिय सज्जनों ! जीवन चरित्र लिखने की चाल (प्रथा) आजकी नहीं बहुत पुरानी है, जैन आगमों में तीर्थंकर देवों के चरित्र तो उपलब्ध होते ही हैं किन्तु साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओं के चरित्र भी मिलते हैं। किसी भी स्वर्गीय महा पुरुष का चरित्र पढ़कर देखो आपके हृदय में सद्भाव की वृद्धि अवश्य होगी। उनके सद्गुणों का अनुकरण करने को आपके हृदय में अवश्य उत्कण्ठा जागृत होगी। इस लघु पुस्तक में जिन स्वर्गीय सद्गुरु पूज्य श्री रतनचन्द्र जी म० का चरित्र चित्रण किया गया है उनका जीवन एक धर्ममय जीवन था, अन्तिम समय तक वह धर्म प्रचार करते रहे। गुरुदेव के चरित्र को पढ़कर आप सज्जन अतीव प्रसन्न होंगे। हां एक बात अवश्य है कि यह जीवन चरित्र विस्तार से नहीं लिखा गया, इस बात का मुझे बड़ा खेद है किन्तु जो भी कुछ बातें इसमें मैंने लिखी हैं वह बड़ी खोज के साथ लिखी हैं। इस पुस्तक को लिखने की जो भी प्रेरणा मिली है वह सब आगरा विराजित वृद्ध संयमी आचार्य पूज्य श्री पृथ्वी चन्द्रजी म० से मिली है। घोर तपश्चर्या करने वाली महासती श्री पद्मश्रीजी महाराज तथा आर्या श्री हितश्रीजी का भी मैं बड़ा आभारी हूं, जिन्होंने मेरे को इस पुस्तक के लिखने में सहायता दी। साथ में मैं अपने प्रिय शिष्य विनयादि गुण सम्पन्न "मुनि श्री आनन्द ऋषिजी" को भी नहीं भुला सकता इन्होंने भी इस पुस्तक के लिखने में काफी सहायता दी। इस चरित्र के साथ २ जिस (मनोहर) सम्प्रदाय में गुरुदेवजी दीक्षित हुए थे उन पूज्याचार्य श्री मनोहर दासजी म० की सम्प्रदाय की पट्टावली भी दे दी है, जिससे पुस्तक की शोभा और भी अधिक बढ़ गई है।

भवदीय

जैन मुनि श्री खुशहाल चन्द्रजी महाराज

चरखी दादरी

पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सज्झाय

रतन मुनि पडिताई थारी, दिल्ली मडल में खूब दीपता, तपस्या विध न्यारी। रतन मुनि पडिताई थारी ॥ टेक ॥

जम्बू दीपका भरत क्षेत्र मे, जन्म लिया आई।
सु श्रावक गुणवन्तो श्राविका, रहे आज्ञाकारी ॥ रतन० १ ॥
शहर सिधाणे गाम हालोजे, गुज्जर कुल माही।
आय के जन्म लिया है, उत्तम नर भव माही ॥ रतन० २ ॥
गगाराम पिता सुखकारी, सरुपादे माई।
पूज्य हरजोमलजी पै दीक्षा लीनी, नारनौल माही ॥ रतन० ३ ॥
दीक्षा ले पडित हुआ, भव्य जीवा हितकारी।
देश विदेश मे दई देशना, जठे यश कीरत भारी ॥ रतन० ४ ॥
स्वमत परमत सु चर्चा कीनी, विद्या अनुसारी।
पाखडियो ने दूर हटाया, समता दिल धारी ॥ रतन० ५ ॥
सम्वत् अठारहसो पचास, भाद्रा बदो चौदस जन्म धारी।
बासठ भादो शुद छठ शुक्र, दीक्षाव्रत धारी ॥ रतन० ६ ॥
सम्बत् उनीसे साल इकीसे, सलेखना ठाई।
वैशाख शुदी बारस दिवसे, सथारो ठाई ॥ रतन० ॥
देश देश के यात्री आये, दर्शन केताई।
स्वामी चतुरभुज जी ने व्याख्यान जो बाचा, परषदा के माही ॥ रतन० ८ ॥
शहर आगरे की लोहा मडी मे, श्रावक हितकारी।
विविध भान्ती से करा महोच्छव, बहु विधी विस्तारी ॥ रतन० ९ ॥
दिवस चार को आयो सथारा, धर्म ध्यान ध्याई।
पुन्यम के दिन पहर तीसरे, अमरापुर जाई ॥ रतन० १० ॥
चन्द्रभान को शुद्ध पद दीजो, समकित सुख दाई।
बार बार मेरी यही बीनती, मुझ राखो चरण माही ॥ तन० ११ ॥

शुभम्



गुरुदेव पूज्यश्री रत्नचन्द्र जी महाराज

श्री पूज्य मगलसेन गुरुवेनमः

अलौकिक रतन प्रकाश

अर्थात् पूज्य श्री रतनचन्द्रजी महाराज

का

जीवन चरित्र

श्लोक—ॐकार विन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगी नः
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ॥१॥

गाथा—सिद्धाणं णमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
सन्ति सन्ति करे लोए, पत्तोगइ मणुत्तरं ॥२॥

प्रिय वाचक वृन्द ! पूज्य गुरुदेव श्री रतनचन्द्र जी महाराज की अपार कृपा तथा उनके परम पवित्र उपदेशों और सन्देशों की जनता सदैव के लिए ऋणी रहेगी । गुरुदेवजी ने भारत के कौने-कौने में भ्रमणकर जनता को सत्यपथ दिखलाया और धर्म का नाद वजाकर जनता को अज्ञान निद्रा से जगाया । इस परिवर्तनशील संसार में वैसे तो अनेकों आत्माओं का आगमन होता रहता है किन्तु जनता तो उनको ही याद किया करती है कि जिन्होंने अपना ज्ञान, ध्यान, जप, तप, संयम, वल द्वारा लोगों को कल्याण का मार्ग दिखाया है । दुनियां उनके जीवन चरित्र को अपना आदर्श मानकर आगे बढ़ती है और उनके पवित्र गुणों से अपनी आत्मा को संयुक्त करने की प्रबल कोशीश करती है । पूज्यपाद गुरुदेव श्रीरतनचन्द्रजी महाराज भी एक अनूठे (सुन्दर) और सुरभित कुसुम (पुष्प-फूल) थे । उन्होंने अपनी मादक गन्ध से समाज को आह्लादित आक-

र्पित करके आदर्श ढंग से अपनी ऐलौकीक लीला समाप्त करके दिव्य लोक (स्वर्ग) वासी बने। गुरुदेवजी का दिव्य सन्देश। हालाकी गुरुदेवजी के स्वर्गवास हुए को आज विक्रम स० २०२६ इस वैशाख शुदी १५ शुक्रवार को १०६ वर्ष हो गये है। आज भी लोगो के कानो मे गूज रहा है। गुरुदेव जी की भव्याकृति आज भी ज्यों की त्यों नेत्रो के सामने मौजूद सी प्रतीत हो रही है। गुरुदेव जी के भक्त तथा शिष्य वर्ग भ्रमरो की भान्ती गुरुदेवजी के चरण-कमलों मे मडराया करते थे। गुरुदेव के मन मोहक दर्शनों से वे कभी तृप्त नही हुआ करते थे। गुरुदेवजी एक दर्शनीय नेता व ज्ञानी गुणी एव गुणज्ञ महा पुरुप थे।

पूज्य श्रीरतनचन्द्रजी महाराज का जन्म

इस ही भारत वर्ष की तपो भूमि मे शेखावाटी (राजस्थान) रियासत खेतड़ी से नो मील सिंघाणा शहर के निकट "तातीजा" ग्राम मे गुज्जर वंशोत्पन्न गुज्जर वश के नायक चौधरी "गंगारामजी" की धर्म पत्नी मातेश्वरी "सम्पादेवी' 'की पवित्र दाहिनी कूक्षी से विक्रम सं० १८५० भाद्रा वदी चतुर्दशी को गुरुदेवजी का शुभ जन्म हुआ। ज्योतिर्मय महान् तेजस्वी "रतन" का जन्म क्या हुआ मानों "तातीजा" ग्राम तो "रतन" के प्रकाश से जगमगा उठा। तातीजा ग्राम वासियो तथा माता पिता को क्या पता था कि यह ग्राम का प्रकाश पुंज "रतन"

अपने ज्ञान ध्यान तथा तपोवल से सारी जगती को अलौकित कर देगा। माता पिता ने वालक का नाम "रतनलाल" रखा। माता पिता ने इस सर्वगुण सम्पन्न "रतन" को पाकर अपना बड़ा ही अहो भाग्य समझा। ग्राम वासियों ने गुरुदेवजी के जन्मोत्सव में समलित होकर गुरुराज को आसिर्वाद दिया। गुरुदेव के दिव्य (आलौकीक) रूप को देखकर उनके जीवन के लिए शुभ कामना की। अपने शुभ गुणों के कारन गुरुजी सबके प्रिय (प्यारे) बने।

गुरुदेव श्री रतनचन्द्रजी महाराज को वैराग्य और दीक्षा

गुरुदेवजी बाल लीला करते हुए जब छ सात वर्ष के हुए तो एकदिन कुल क्रमानुसार छोटे बछड़ों को चराने के लिए पास वाली डूँगरी (पहाड़ी) के पास कैरोंकी बनी में चले गये सामने क्या देखते हैं कि एक भेड़िया आने लग रहा है। वह भेड़िया बछड़ों पर झपटा, आप डर के मारे यानी जान बचाने के लिए समीप वाले वृक्ष पर चढ़ गये। उधर बछड़े भी अपने छोटे-छोटे सिंगों से बलपूर्वक भेड़िये को धकेलते-धकेलते दूर निकल गये, भेड़िये को भगाकर बछड़े कुशलतापूर्वक घर पहुंच गये।

गुरुदेव जी ने जब देख लिया कि भेड़िया बहुत दूर चला गया है तब आप भी वृक्ष से नीचे उतर कर घर चले आये। माता पिता को जंगल में भेड़िये से घिर जाने और जान बचाकर आने की सब घटना (राम कहानी) कह

सुनाई। माता ने "रतन" को छाती से लगाया बड़ा प्यार किया, भगवान को कोटी कोटी धन्यवाद दिया। पुत्र बचा लाख पाया।

एक दिन गुरुदेवजी अपने पिता के साथ सिंघाणा शहर आ गये उस समय सिंघाणा मे आचार्य श्री मनोहरदास-जी महाराज के पचम पट्टधर आचार्य श्री लूणकरणजी महाराज अपनी शिष्यमंडली के साथ विराजमान थे। वे आहार लेने के लिए जा रहे थे जब बाजार मे महादेव जी के चोतरे के पास आये तो बाजार की जनता ने महाप्रभाविक आचार्य श्री जी को खड़े होकर वन्दना की (आचार्य श्री जी की यह जन्म भूमि थी) प्रानुका चौधरी बहादुरमल जी ने भी बड़े भाव भक्ति पूर्वक चरण वन्दना की। बाजार के लोगो की देखम देख चौधरी गंगाराम ने भी चरनो में धोक दी, अपने पिता की देखम देख गुरुदेव ने भी आचार्य श्री जी को हाथ जोड़े (नमस्कार करी)* आचार्य श्री जी की दृष्टि छोटे से बालक "रतन" पर पड़ी। बालक रतन के

---

*आचार्य श्री पूज्य लूणकरणजी महाराज का जन्म सिंघाणा शहर में अग्रवाल वंश डुडवा पे हुआ था, इन्होंने अपनी माता की आज्ञा से विक्रम सं० १८३५ मगसिर बदी १० को झुंझणु शहर मे दीक्षा धारण करी थी, आचार्य श्री के जेष्ठ गुरुभ्राता तपस्वी श्रीदेवकरनजी थे जिनके शिष्य आचार्य श्रीतुलसीरामजी महाराज थे। पूज्य श्रीलूणकरणजी म० के लघु गुरु भ्राता तपस्वी श्रीहरजीमलजी म० थे इनके शिष्य पूज्य श्रीरतनचन्दजी महाराज थे।

विशाल मस्तक को देखकर अपने ज्ञान बल से जान लिया कि यह "रतन" तो मिट्टी में पड़ा हुआ है, यह तो शीघ्र ही दीव्यात्मा के रूप में संसार का कल्याण करने वाला होगा, इसके द्वारा जिन धर्म का उद्योत होगा एवं इसके द्वारा जिन शाशन की उन्नति होगी। आचार्य श्री जी ने पूछा यह बालक किसका है। उत्तर में चौधरी बहादुरमलजी ने कहा कि—भगवन् यह बालक इन चौधरी गंगारामजी का है।

जैन स्थानक में आकर आचार्य श्री जी ने चौधरी बहादुर मलजी को बुलाकर कहा कि तुम इस बालक रतन की धर्म दलाली करवाओ यह बालक साधु बनकर जैन धर्म को दिपावेगा। बस फिर क्या था आचार्य श्री जी की आज्ञा को सिरोधार्य कर बहादुरमलजी तातीजा ग्राम में जा पहूँचे और चौधरी गंगाराम सरुपादेवी से पुत्र "रतन" की भिक्षा माँग ही ली। प्रानुका चौधरी रामनाथ बहादुरमल केशोराम की प्रेरणा से समस्त जगत के उजयारे "रतनलालजी" आचार्य श्री जी की शरण में आ गये। गुरु के चरण शरण में रहकर खूब ही जी लगाकर विद्याध्ययन किया, कई साल तक पढते रहे गुरुजी विचरते हुए नारनौल चौमासे के लिये पधार गये। माता-पिता अपने प्यारे पुत्र रतन तो देखने के लिए नारनौल आये, देखते क्या हैं कि बालक रतन तो सच मुच रतन बनने के लिये आचार्य श्री जी के सामने छाती ताने बैठे हुए विद्याध्ययन करते हुए गुरु से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे गुरुदेव

आप मेरे को संसार समुद्र मे पार उतारने वाली जहाज के समान भगवती जैन दीक्षा से दीक्षित करे। यह दीक्षा महान् सुखो की खान है। यह दीक्षा मोह माया को नष्ट करती है जो इस भगवती दीक्षा को ग्रहण करता है उसे मोक्षादि सद्गति की प्राप्ती होती है। माता पिता ने भी रतन के ये वचन सुने। घर पर ले चलने का अतीव आग्रह करने लगे "रतन" जी की आत्मा तो पूरी ही वैराग्य के रंग मे रंगी जा चुकी थी उन्होंने ज्यों त्यो करके माता पिता को अपने अनुकूल बना ही लिया। बडी प्रसन्नता के साथ मात पिता ने दीक्षा की आज्ञा दे दी। आज्ञा देकर वह अपने घर चले गये। गुरुदेवजी दो तीन साल तक वैराग्यावस्था में रहकर विद्याध्ययन करते रहे * और विक्रम सं० १८६२ भाद्राशुदी छठ शुक्रवार को प्रात काल नो बजे आचार्य पूज्य श्री लूणकरणजी महाराज के समीप भवजल तारनी भगवती जैन दीक्षा धारनकरी, गुरुदेवजी को पूज्यपाद श्री हरजीमलजी महाराज के शिष्य बनाये गये, दीक्षा के समय गुरुदेवजी की आयु बारह वर्ष और आठ दिन की थी। यह उमर बच्चों के

---

*श्री पूज्य रतन स्मृति ग्रन्थ मे शास्त्री विजय मुनिजी लिखते है कि गुरुदेवजी एक वर्ष तक वैराग्य अवस्था मे रहे यह हमे कुछ ठीक सा लगता है। किन्तु तपस्वी श्रीचन्दजी "रतनज्योति" मे लिखते है "रतनचन्दजी" गुरु के पास आते ही नारनौल मे दीक्षा ले ली थी उनका यह लिखना ठीक नही है उनको यह लेख आचार्य पूज्य श्रीपृथ्वीचन्दजी म० से पूछकर लिखना था।

खेल कूद की होती है किन्तु गुरुदेवजी का जीवन खेल कूद के लिये नहीं था, वह था जीवन को उन्नत बनाने एवं ज्ञान ध्यान की साधना के लिये ।

गुरुदेव श्री रतनचन्द्रजी म० का विद्याध्ययन

दीक्षा के अनन्तर (बाद) गुरुदेवजी ने पूज्यपाद तपस्वी श्री हरजी मल जी महाराज से सूत्र शास्त्रों का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया । प्यारे पाठको ! गुरुदेवजी की स्मरण शक्ति अतीव तिव्र थी कि वह एक बार जो बात सुनलेते थे उसको कभी नहीं भूलते थे । शास्त्राभ्यास में उनकी बहुत रुची थी, एक एक दिन में शास्त्रों की हजार हज़ार गाथायें (श्लोक) कण्ठस्थ कर लेते थे । मुनि मर्यादा का भी गुरुदेवजी को काफी ध्यान रहता था, जो वे पढ़ते थे उसको आचारण में लाने का भी प्रयतन करते थे । उस समय आचार्य पूज्य श्री मनोहरदासजी महाराज की सम्प्रदाय के शास्त्रज्ञ प्रख्यात पंडित परम आदरणीय महापुरुष पूज्य श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज थे जो कि समग्र शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान थे *

---

* पूज्य श्रीमनोहरदासजी म० के प्रधान शिष्य श्रीनानकचन्दजी महाराज की दीक्षा सं० १७५१ मंगसिर वदी ६ को नारनौल में हुई । सं० १७७५ आशोज शुदी ६ गुरुवार को पूज्य श्रीनानकचन्दजी म० के पास देहली में सिघाणे वाले खेमचन्दजी गोविन्दरायजी ने दीक्षा ली । सं० १७८१ मंगसिर शुदी २ को भगवन्त-रायजी ने दीक्षा ली । सं० १८८२ मंगसिर वदी २ गुरुवार को मन्नीरामजी म० ने दीक्षा ली, सं० १८८७ चैत्र वदी ६ गुरुवार को साहबरामजी ने दीक्षा ली सं०

उनकी पवित्रसेवा मे रहकर धर्म और दर्शन शास्त्रो के अति-रिक्त ज्योतिष शास्त्र वैदिक एव तन्त्रादिक विद्या का भी खूब अध्ययन किया। गुरुदेवजी ने अपने ताऊ गुरु जो जैन आगमो के उद्भट विद्वान थे उनका नाम "पूज्य आचार्य श्री

१७८८ चैत्र शुदी दूज गुरुवार को मोहनलालजी ने दीक्षा ली स० १७९० मग-सिर बदी ६ शुक्रवार को पूज्य श्रीखेमचन्दजी म० के पास लालचन्दजी ने दीक्षा ली। स० १७९२ सिघाणा मे मोजीरामजी ने दीक्षा ली स० १८१६ श्रावण शुक्ला ६ गुरुवार को सादारामजी डेडराजजी तथा परम आदरणी महापुरुष पूज्य पाद श्रीलक्ष्मीचन्दजी महाराज ने दीक्षा धारन की। कर्मो की गति बडी विचित्र है कि स०१८१६ सन् १७५९ माघ कृष्णा तीज को काधला शहर मे एक सचाई के कारन पूज्य श्रीखेमचन्दजी महाराज, श्रीगोविन्दरामजी म० श्री साहबरामजी म० आदि तीन सन्त मुसलमान सैनिको द्वारा पूछने पर कि तुम हिन्दू हो या मुसलमान। सत्यवक्ता मुनिराजो ने फरमाया कि "हम हिन्दुओ के सन्त है" बस इतना सुनते ही उन दुष्ट म्लेछो ने तीनो सन्तो को कतल कर दिया, सन्त महा-पुरुष आयु पुरी करके स्वर्गलोक मे जा विराजमान हुए। फौज के मालिक (अफसर) का हुक्म था कि काधला मे जो मुसलमान हो उनको छोड देना और जो हिन्दू हो उनको मार देना (मौत के घाट पार उतार देना) नवदीक्षित महा-मुनि श्री पूज्य लक्ष्मीचन्दजी म० श्री सादारामजी म० तो आयु रोगता के कारन बच गये। मनोहर सम्प्रदाय मे सबसे अधिक सयम पूज्य श्रीलक्ष्मीचन्दजी महा-राज का (अस्सी वर्ष से अधिक) सयम रहा। दूसरे आचार्य गुरुदेव पूज्य श्रीरघु-नाथजी महाराज का। जिनका जन्म विक्रम स० १९२४ मगसिर बदी दसमी शुक्रवार को हुआ था, स० १९३४ मे बैरागी बने स० १९३९ फागुण बदी १० रवि वार को लुहारी ग्राम (मेरठ) ग्राम मे आचार्य श्री पूज्य मगलसेनजी महाराज के पास दीक्षा ली स० २०१७ पोह सुदी १३ शुक्रवार को चरखी दादरी मे आधी रात के समय स्वर्गवास हुआ था, उस समय सेवा मे मुनि खुशहालचन्दजी थे और देहली से प श्री लक्ष्मीचन्दजी ऋषभचन्दजी भी आ गये थे। पोह सुदी १५ रविवार को पाच बजे दाह सस्कार हुआ था।

लूणकरणजी था उनके पास रहकर विद्याध्ययन किया। गुरुदेव जी ने अपने विद्यादान दाता ताऊ गुरुजी के विषय में एक छन्द लिखा है वह भी प्यारे पाठकों के पठनार्थ यहां पर लिख देता हूँ।

दोहा—तास शिष्य साधु गुणागरा, आज्ञा कारक जाण।
लूणकरणजी साधु हैं, सुधी स्वजन मतिमान ॥१॥

छन्द—गुरु आज्ञा के धारी, पाँच सुमिति के विचारी,
विषय दण्ड जीतके, मोक्ष मार्ग को ध्याये हैं।
करुणा के विहारी, तीनगुप्ति के कारी,
छोड़ के संसार को, संयम लव लाये हैं।
ज्ञान के विचारी, जिन मार्ग के उजारी,
चतुर्संघनायक, जास गुण गाये हैं।
गुणध्यान के भण्डारी, शुध्दि बुध्दि के विचारी,
श्री पूज्यजी की पट्टी, शोभा घणीपाये हैं ॥१॥

गुरुदेव जी का भ्रमण लेखन कला और ज्ञान चमत्कार

पूज्यगुरुदेव श्री रतनचन्दजी महाराजने अपनी विशाल ज्ञान की रोशनी समस्त भारतवर्ष में फैलादी थी। जन कल्याण के लिये भारत के कौने कौनेमें भ्रमण किया। विक्रम सं० १८६२ का चौमासा नारनौल किया, एक दिन गुरुकी आज्ञा लेकर आप शौचादि के लिये बड़े तालाव की तर्फ गये कि वहां पर नो चौक की हवेली वाले राज्यमान संघी भाई की हथनी पानी पीने के लिये तालाव पर जा रही थी

दोहा—शर (५) ऋषि (७) सिद्ध (८) चन्द्रमा (१) १८७५
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष जान । तृतीय तिथि रविवार शुभ,
चतुर्थ याम प्रणाम ॥१॥

स० १८७५ का चौमासा "मलेरकोटला" किया, भाद्रा शुदी अष्टमी मगलवार को आर्या पन्नादेईजी के लिए "गज-मुकमाल" चरित्र लिखा । स० १८७६ का चौमासा बड़ौत किया और १८७७ का चौमासा "नाभा शहर" (पजाब) मे किया सं० १९७९ का चौमासा पटियाला किया, कार्तिक वदी ३ को "भगवती सूत्र का चौवीसवां शतक के चौवीसवा उद्देसा का थोकड़ा लिखा । स० १८७९ सिघाणा शहर पधारे, यहा पर "दस बोल दुर्लभ" की सज्झाय बनाई और ज्येष्ठ शुदी ३ गुरुवार को चौवीस तीर्थंकरो की स्तुती बनाई, वहा से जयपुर गए और सागानेरी दरवाजा के पास रुई की मंडी रामचन्द्र के थान मे ज्येष्ठ शुदी द्वादशी शनिवार को "श्रीमती" का चौढालिया लिखा और जयपुर से आकर स० १८७९ का चौमासा नारनौल शहर मिश्रवाडा सबलुका की बैठक मे किया, आशोज वदी १३ को भगवती सूत्र ७८५ पृष्ठ का आर्या श्रीपन्नादेईजी के लिए लिखा । (यह सूत्र आत्मानन्द जैन शास्त्र भडार रूपनगर देहली मे है) भगवती सूत्र के अन्तिम पृष्ट पर गुरुदेवजी ने क्षय मास के विपय मे एक दोहा लिखा है, वह भी प्यारे पाठकों की जानकारी के लिए यहाँ लिख देता हू ।

दोहा—सम्वत् अठारासो उणासिया, आशु (आशोज) दोई जाण।
सम्वत् ग्यारह मासिया, पोस मास की हाण ॥१॥

कार्तिक शुदी ११ आदित्वार को, "ठाणांक सूत्र" लिख कर समाप्त किया। गुरुदेवजी ने दोहे और चौपाई में सम्वत् देश ग्राम मोहला स्थान गुरु का नाम आदि बतलाया है वह भी प्यारे पाठकों की जानकारी के लिए लिख देता हूं—

दोहा—सम्वत् निधि (९) ऋषि (७) सिद्ध (८) शशी, (१) (१८७९) मास कार्तिक यह।
शुक्ल पक्ष रुद्र (११) तिथि, पूर्ण ग्रन्थ करेह ॥१॥

चौपाई—नारनौल शुभ ठाम गिनिजे, देश प्रसिद्ध "मेवात" जो लीजे।
पाड़ा (मोहला) मिश्रवाडाज कहावै, तिहाँ सबलुका मंगल गावै ॥१॥

दोहा—तिनकी वैठक सोभती, तिह मध्य कियो चौमास।
हरजीमल शिष्य रतनचन्द, ठाणा दोई पास ॥१॥

नोट—ठाणांग सूत्र के अन्तिम पृष्ठ पर दोहे में वतलाया है कि इस वर्ष (१८७९) में दो आशोज हैं, पोह महीना क्षय है। यह दोहा वही है जो भगवती सूत्र के अन्त में लिखा है। इस चौमासे में ही साधु गुणमाला वनाई और सं० १८७९ फागुण शुदी ४ को अपने विद्यागुरु पूज्य पाद श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज के लिए "साधु महिमा" का पाठ

नारनौल में लिखा।

गुरुदेवजी ने ठणाग सूत्र के अन्त मे जो पट्टावली लिखी है वह और जो पट्टावली पृथक बनाई है उन दोनों पट्टालियों का सार भी पाठको की जानकारी के लिए यहाँ लिख देता हू।

दोहा—नागोरी गच्छ है बडा, श्री पूज्य वृद्धमान। लघु भ्राता
गुणाधार है, मनोहर ऋषि सुजान ॥१॥ गच्छ
छोडके निकला, श्री पूज्य मनोहरदास। तिनके पट
वर्णन करू, सुणजो गुण प्रकाश ॥२॥ पूज्य मनोहर
दासजी, प्रसिद्ध देश-विदेश। सजम पाल स्वर्ग गया,
टाला कर्म क्लेश ॥३॥

छन्द—पच महाव्रत पाले, पाच ही प्रमाद टाले, पाच इन्द्रि-
जीत के, स्वरूप आप लख्यो है। करी तप कर्म शोष्या,
मोह लोभ बेऊ मोस्या, ऐसे मुनिराज, जिन कर्म
वैरी भख्यो है। खडे रहे छ मास लग, दिन रात दोऊ
पग, छठ-छठ पारनो, करत बहु हर्ष्यो है। किय कर्म
चकचूर, ऐसे मुनिराज सूर, धर्म का उद्योत कर, आत्म रस
चख्यो है ॥१॥

दोहा—तास शिष्य पडित हुआ, बहुत गुणागर जान।
पूज्य भागचन्दजी विचरते, आगम के परमाण ॥१॥

छन्द—सभा मन मोहे, मानो इन्द्र कैसे सोहे, बाचे है
व्याख्यान जब, सुधारा वर्षत है। सारा वेद आग के
जाण है समागम के, सूत्रार्थ सुण भव्य जन्तु हर्षत है।

कियो है विहार, देश-देश मंझार, जायके गुजरात, निज आपकु परखत है। भव्य जीवही के तारक, सब विघ्न ही के वारक, ऐसे मुनि दर्शन कु, मेरा मन तरसत है ॥१॥

दोहा—तास पाटोधर जानिये, गुण धारक वहु भान्त।
पूज्य श्री सीताराम जी, मन में जारे शान्त ॥१॥

छन्द—भव समुद्र तरवेकु, मोक्ष रमणी वरवेकु, मान चोटकर वे कु, संजम रथ सज्यो है। कर्म अरि मारवेकु, मिथ्यात सेन टारवेकु, कर्म वीज गारवेकु, संजम कोट रच्यो है। मोह भूप जीतवेकु, कुमति वन हरवेकु, भ्रम भीती भितिवेकु, वहुत मन खिज्यो है। ज्ञान रूप धारवेकु, संजम ही पार वेकु, इन्द्रि गाम वारी वेकु, दमामो ही बज्यो है ॥१॥

दोहा—शिष्य जारा गुणवन्त हैं, वहु आगम के जाण।
श्री पूज्य श्योरामदास जी, गुरु भक्ता गुणवान ॥१॥

छन्द—गच्छ के शिंगार, कर्म रूप वैरी मार, चारों ही कषाय, क्रोधादि जिन जीते हैं। समता के सार, धर्म धन है भण्डार, रुचि विस्तार, सूत्रार्थ जिन लीते हैं। कलु काल मंझार, मानो गोतम अवतार, संजम धार के, अमृत रस पीते हैं। गुण को प्रमाण, कहाँ लो करूँ वखाण, कर्मन कु मार के, स्वर्गवास लीते हैं ॥१॥

दोहा—तास शिष्य साधु गुणागरा, आज्ञा कारक जाण।
लूणकरण जी साधु हैं, सुधी स्वजन मति मान ॥१॥

छन्द—गुरु आज्ञा के धारी, पाँच सुमिति के विचारी,

विपय दण्ड जीत के, मोक्ष मार्ग को ध्याये है। करुणा के विहारी, तीन गुप्ति के कारी, छोड के समार को, सजम लवलाये है। ज्ञान के विथारी, जिन मार्ग के उजारी, चतुर्संघ नायक, जास गुण गाये है। गुण ध्यान के भण्डारी, शुद्धि बुद्धि के विचारी, श्रीपूज्य जी की पद्दी, शोभा घणी पाये है ॥१॥

दोहा—श्री पूज्य श्योरामदास जी, वहु विध गुण भण्डार।
*तीजा शिष्य तेहना नमू, हरजीमल हितकार ॥१॥

छन्द—दुक्कर तपकारी, है हेत के विचारी, रज कर्म रूप, जिन दूर ही उडाये है। जगम जीव जेते है, तस थावर केते है, सब प्रतिपाल, करुणा रस गाये है। ममा मोह छोड के, सजम हित जोड के, आप रूप धार के, मुक्ति ही को ध्याये है। लला लोभ जीते, ये पाच वर्ण कीते, ऐसे मुनिराज, जिन वानी मे सुनाये है ॥१॥

दोहा—सब साधन को नित्य नमू, वार वार गुण गाय।
कृपा जो मुझ पर कीजिये, रतनचन्द सिर नाय ॥१॥

ठाणाग सूत्र के अन्तिम पृष्ट पर जो पट्टावली लिखी है वह इस प्रकार है—

दोहा—नागौरी गच्छ है वडो, श्री पूज्य वृद्धमान।
लघु भ्राता मनोहर ऋषि, सुधी स्वजन मतिमान ॥१॥

*आचार्य श्री श्योरामदास जी महाराज के चार शिष्य हुए हैं तपस्वी श्री देवकरणजी म० आचार्य श्री लूणकरण जी म० तपस्वी श्री हरजीमल जी म०

सम्बेगे प्रेरित किया, करी जो क्रिया उद्धार ।
जैन धर्म उद्योत कर, भव्य जीवन हितकार ।।२।।
पूज्य मनोहरदास जी, प्रसिद्ध देश विदेश ।
संजम पाल स्वर्ग गया, टाला कर्म क्लेश ।।३।।
तिह शिष्य अति पंडित निपट, भागचन्द जी नाम ।
तिह शिष्य सीतारामजी, त्रिकरण शुद्ध सु ठाम ।।४।।
पट चतुर्थ महा गुणी, श्योरामदास गुण धीर ।
तेहना मुख आगल हुआ, चार शिष्य गम्भीर ।।५।।
लूणकरणजी पाटवी, हरजीमल हितकार ।
हरजीमल शिष्य रतनचन्द, किया बुद्धि प्रकाश ।।६।।

सं० १८८० वैशाख कृष्णा नोमी आदित्यवार को सिंघाणा शहर में इलायची कुमार का चौढालिया बनाया और सं० १८८० का चौमासा भी सिंघाणा किया । सं० १८८१ का चौमासा दादरी किया और विहार करके लस्कर पधारे यहां पर फाल्गुण शुक्ला १३ को प्रदेशी राजा का चरित्र लिखा और लस्कर से विहार करके खेतड़ी (शेखावाटी) पधारे यहां पर चैत्र वदी २ को वेद कल्प सूत्र लिखा । सं० १८८२ का चौमासा "अमृतसर" किया और सं० १८८३ वैशाख शुदी २ को दादरी में आवश्यक सूत्र लिखा और सं० १८८३ का चौमासा भीदादरी किया, कार्तिक कृष्णा पंचमी शनिवार को संघयणी सूत्र लिखा सं० १८८४ का चौमासा सिंघाणा कर जमनापार वड़ौत पधारे और सं० १८८५ का चौमासा वड़ौत किया, यहाँ पर सात कुव्यशन की सज्झाय वनाई । सं० १८८६ का चौमासा आगरा धूलियागंज के वड़े उपा-

मे किया यहा पर नेमराजुल की सज्झाय बनाई, चौमासे बाद नारनौल पधारे यहा पर चरखी दादरी का बनाया हुआ बारह मासा फाल्गुण वदी ५ को लिखा। स० १८८७ का चौमासा देहली किया और स० १८८८ मे लस्कर पधारे आषाढ मास मे तेरह काठिया लिखे चौमासा भी लस्कर किया, इस चौमासे मे दसवै कालिक सूत्र पाटका लिखा और कातिक के महीने मे ऋषभदेव भगवान की स्तुति (प्रार्थना) बनाई। बेले बेले पारना करने वाले उग्र तपस्वी पूज्यपाद श्री हरजीमलजी महाराज जिनका का जन्म छपरौली के पास "हलालपुर" ग्राम मे हुआ था, पिता का नाम "सहजरामजी" और माता का नाम "भाग्यवती देवी, था। तपस्वी जी के पिताजी और ताऊ सेडमल जी ने मनोहर सम्प्रदाय के पूज्य श्री मनसुखराम जी म० के पास दीक्षा ली थी और तपस्वी जी म० ने विक्रम सवत १८४० के लगते ही देहली मे आचार्य श्री स्योरामदास जी महाराज के पास दीक्षा ली। आप अपने गुरु तपस्वी श्री हरजीमल जी म० के साथ भरतपुर पधारे, उस समय आप सोलह ठाणे मे थे। तपस्वी जी ने अपनी आयु निकट आई जानकर सथारा कर दिया माह सुदी ७ गुरुवार को। अन्तिम समय मे तपस्वी जी ने आप (रतनचन्द जी म०) को अपने पास बैठाकर कहा कि "रतन, तुम खूब धर्मोद्योत करना जिससे तुम्हारे सब जन्म मरन के चक्कर मिट जावेगे और शीघ्र ही तुम

को मुक्ति की प्राप्ति हो जावेगी, माघ शुक्ला अष्टमी शुक्रवार को अर्ध रात्रि के समय तपस्वी जी महाराज का स्वर्ग वास हुआ । सं० १८८८ भरतपुर मे विहार करके अलवर पधारे, चैत्र मास में कलयुग बतीसी लिखी और १८८६ का चौमासा अलवर किया । सं० १८६० का चौमासा जयपुर किया । सं० १८६१ का चौमासा बिकानेर किया, असोज वदी ३ को "अणुत्तरोववाई सूत्र" लिखा । बिकानेर से चलकर सं० १८६१ शर्दियों में लोहामंडी आगरा पधारे यहां पर लाला मंजुमल जी के बगीचे में ठहरे, पुनः संघ के अत्याग्रह से लोहामंडी में आकर विराजमान हुए । सर्व प्रथम लोहामंडी में गुरुदेव जी ने ही जैन धर्म का झण्डा गाड़ा था । जैन समाज के जाज्वलमान महा प्रभाविक नक्षत्र गुरुदेव ने अपनी ज्ञान गरीमा एवं चारित्र निष्ठा से आगरा लोहामंडी के धर्म मार्ग से भूले भटके अग्रवाल लोहिया समाज को नव चेतना प्रदान की एवं सत्य अहिंसा के मार्ग पर दृढ़ रहने की प्रेरणा दी, जनता का अज्ञान बस काई की तरह फटता ही चला गया । अग्रवाल लोहिया समाज ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया । सं० १८६२ वें का चौमासा आगरा शहर मोती कटला के बड़े उपाश्रय में किया । आगरा में ही सं० १८६३ भरत बाहुबल सम्वाद के सवैये लिखे और सं० १८६३ द्वितीय आषाढ़ शुक्ला पंचमी को "गोपाचलपुरा" (मारवाड़(में प्रश्न लिखे और सं० १८६३

का चौमासा कुचामण शहर (मारवाड) मे किया और स० १८६४ का चोमामा विनौली किया और स० १८६५ का चौमासा जोधपुर किया। स० १८६६ आगरा शहर मे श्रावक के वारह व्रतो की सज्झाय बनाई। स० १८६६ देहली मे अपने प्रिय शिष्य "अमरचन्द जी" के पढने के लिये ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को आरती लिखी और स० १८६६ का चौमामा पटयाला (पजाब) किया, इस चौमासे मे फरुखनगर वाले सन्त श्री मनसाराम जी म० के शिष्य प० श्री दयाराम जी महाराज ने आशोज शुदी २ दूज गुरुवार को पत्र द्वारा नो प्रश्न पूछे थे जोकि "मोक्षमार्ग प्रकाश" ग्रन्थ मे छपे हुए हैं। पटयाला मे विहार करके नारनौल पधारे स० १८६७ मे वैशाख शुक्ला तीज को आप नारनौल थे और स० १८६७ वे का चौमासा ग्वालियर के लश्कर मे किया ओर स० १८६८ वे का चौमासा विनौली किया, श्रावण कृष्ण पक्ष मे सगर चक्रवर्ती का चौढालिया बनाया, दूसरे आसौज शुदी ८ शुक्रवार को गता गतिका थोकडा लिखा और दूसरे आशोज शुदी १२ बुधवार को "मोक्ष मार्ग प्रकाश ग्रन्थ बनाया। विनौली चौमामा समाप्त करके सिघाणा शहर पधारे उस समय वहा पर आचार्य श्री मनोहरदास जी म० की सम्प्रदाय के घोर तपस्वी श्री सेवगराम जी म० तथा आचार्य परवर पूज्य पाद श्री तुलसीराम जी महाराज अपनी शिष्य मडली के साथ

विराजमान थे, गुरुदेव जी तपस्वी जी म० के तथा अन्य सन्तों के दर्शन कर अतीव प्रसन्न हुए। माह वदी ४ आदित्यवार को तपस्वी श्री सेवगराम जी म० ने संथारा पचक्ख लिया* संथारा

---

*आचार्य श्री पूज्य मनोहरदासजी महाराज के चौथे पाट पर आचार्य श्री श्योरामदास जी महाराज हुए, ये देहली के रहने वाले श्री श्रीमाल थे इन्होंने विक्रम सं० १७७६ कुनाना शहर में दीक्षा धारण करी थी। इनके ज्येष्ठ शिष्य पूज्य तपस्वी श्री देवकरण जी महाराज थे, ये सिघाणा के रहने वाले अग्रवाल डाकोत बॉक में पैदा हुए लाला मनसाराम जी के पुत्र थे, इनकी माताजी का नाम "रामकौर देवी" था। तपस्वीदेवकरण जी म० के ज्येष्ठ शिष्य घोर तपस्या करने वाले तपस्वी राज श्री सेवगराम जी म० थे और दूसरे शिष्य धुरन्धर विद्वान् आचार्य पूज्य श्री तुलसीराम जी म० थे। तपस्वी श्री सेवगराम जी महाराज का जन्म हरियाना भिवानी के पास बापोडाग्राम विक्रम सं १८२० महजीबाई की पवित्र कुक्षी से हुआ था इनके पिता का नाम चेतराम जी था। व्यापार के लिए भिवानी में आकर बस गए थे। भिवानी में धर्म पत्नी का देहान्त हो गया था, उधर सं० १८५६ में तपस्वी देवकरणजी म० का भिवानी पधारना हो गया। उमरया के थानक में चौमासा किया और सं० १८५३ में भी भिवाणी चौमासा किया था। हांसी शहर के रहने वाले बाराव्रती श्रावक घर-बार के त्यागी मगनीराम जी भी भिवानी आये हुए थे। श्रावक जी की प्रेरणा से सेवगरामजी थानक में तपस्वी जी के पास आए। तपस्वी जी महाराज के वैराग्य मय वचनामृत को सुनकर वैराग्य हो गया। घर पर आकर माता पिता से दीक्षा के लिए आज्ञा मांगी उत्तर में माता पिता ने कहा कि जब तक हम जीवित रहें तुम दीक्षा मत लेना वृद्धावस्था में हमारी सेवा करना हमारी मृत्यु के बाद दीक्षा लेना। आज्ञा मानकर माता पिता की सेवा करते हुए। श्रावक वृत का पालन करने लगे : माता पिता के देहान्त के बाद चालीस वर्ष की आयु में विक्रम सं० १८६१ पोह के महीने में चरखी दादरी आकर दीक्षा धारन की तपस्वी श्री देवकरन जी म० के शिष्य बने। अपने गुरुदेव तपस्वी जी के साथ रह कर सेवगराम जी महाराज भी तपस्वी बन गये। व्रत वेला तेला चोला पचोला

पचख लेने के पश्चात् गुरुदेव श्री रतनचन्दजी महाराज ने कुचामण को विहार करने की आज्ञा मागी विहार करने लगे तो तपस्वीजी म० ने कहा "रतन" ! तुम अन्त समय तक मेरे पास रहते तो अच्छा था उत्तर मे गुरुदेव जी ने कहा कि तपस्वी जी ! आपका सथारा लम्बा चलेगा इतने मै कुचामण मे एक मास का कल्प करके आऊ आपके स्वर्गवास मे पहले ही आजाऊगा अर्थात् स्वर्गवास से पहले ही आपकी पवित्र सेवा मे उपस्थित हो जाऊगा। गुरुदेव जी की यह भविष्य-वाणी अक्षरश सत्य सिद्ध हुई। तपस्वी जी को पिचपन (५५) दिन का सथारा आया, फारगुन शुक्ला चतुर्दशी शुक्रवार को इस नश्वर शरीर को त्यागकर तपस्वी जी स्वर्ग लोक को पधारे। तपस्वी जी के स्वर्गवास मे पहले ही गुरुदेवजी विहार कर कुचामण से सिघाणा पधार गये थे।

स० १८६६ वे का चौमासा देहली किया आपके साथ

अठाई आदि की बहुत तपस्या करी स० १८८४ मे भाद्वा के महीने मे पन्दरा और बीस दिन का व्रत किया सिघाणा मे एकान्तरे तपस्या करी बीच मे व्रत वेला तेला चौला आदि की, स० १८८५ श्रावण सुदी तीज को इकतीस दिन का व्रत लिया और भाद्वा सुदी ६ को इकतीस दिन के व्रत का पारना किया। स० १८८६ मे चालीस दिन का व्रत किया स० १८८७ मे मे तीस दिन का व्रत किया। स० १८८६ मे पैंतालीस दिन का व्रत किया, स० १८६० मे सोलह दिन का व्रत किया, स० १८६१ वे मे बत्तीस दिन का व्रत किया, सतरह दिन का व्रत किया। वृद्धावस्था के कारन सिघाणा शहर मे थाना पति हो गये थे, वृद्धावस्था मे भी आपने बडी बडी कठिन तपस्या करी।

ही तपस्वी श्री ख्यालीराम जी म० भी थे। इस वर्ष दो श्रावण थे। चौमासे बाद आगरा पधारे यहां "आत्म-सज्झाय" बनाई और मोती कटला में सती श्री प्रेमकुमारी जी की वैरागन शिष्या "रूपो" बाई को दीक्षा दी। सं० १६०० का चौमासा उज्जैन (मालवा) में किया। सं० १६०१ का चौमासा लश्कर किया इस चौमासे में छमच्छरी निर्णय की प्रथम ढाल बनाई और आसोज शुदी १२ को गजसुकुमाल जी का चरित्र लिखा सं० १६०२ का चौमासा आगरा शहर में किया, लोहामंडी में धर्मारावन और छम-च्छरी निर्णय की दूसरी ढाल बनाई। सं० १६०३ आगरा शहर में पादरी लोगों से चर्चा करी उनसे नो प्रश्न पूछे। सं० १६०३ का चौमासा जयपुर सांगानेरी दरवाजे के पास रुई की मंडी रामचन्द्र के थानक में किया। आसौज शुक्ला पूर्णमासी आदित्यवार को संजय का थोकड़ा लिखा। इस चौमासे में कुचामन के तेरह पन्थ सम्प्रदाय के आचार्य श्री रायचन्द्र जी म० के कहने से श्रावकों ने चार प्रश्न पूछे जिसका उत्तर भाद्वा वदी ९ को दिया। तेरह पंथियों से चर्चा वार्ता हुई। तेरह पन्थ सम्प्रदाय की मुख्य आर्या "श्री दीपा जी" मदनलाल सेठ के घर पर दो दो चार चार छ छ घड़ी बैठकर वातचीत करती और ढाल चौपाई व्याख्यानादि सुनाया करती थी, इसके विषय में भाद्वा बदी ९ को तीसरी चर्चा हुई और भाद्वा शुदी १३ को तीसरे पहर साँगानेरी दरवाजे

के बाहर "आगावाडी" के पास आचार्य श्री रायचन्द जी म० से शास्त्रार्थ हुआ। इस चौमासे में सेठ मदनलाल जी की धर्मपत्नी "नवलाबाई" को ज्ञान दिया, नवलाबाई की तेरह पथ सम्प्रदाय से आसना (श्रद्धा) उतरी और वह बाइस सम्प्रदाय (बाइस टोले) के साधु आर्यों को मानने लगी।

स० १६०४ आगरा लोहामडी मे तपस्या के फल की ढाल बनाई स० १६०४ चौमासा अन्लम ग्राम करके लिसाड ग्राम पधारे और यहा पर पोह वदी पचमी को टीकम जी की नोतत्व लिखी पश्चात् करनाल अम्बाला होते हुए पटयाला पधारे। यहा पर पजाब सम्प्रदाय के पूज्य श्री रामलाल जी म० के ज्येष्ठ शिष्य श्री दौलतराम जी म० तथा श्री पूज्य अमरसिघ जी महाराज आदि सन्त विराजमान थे। पूज्य श्री अमरसिह जी म० के लघु गुरु भ्राता महान् घोर तपस्वी प्रात स्मरणीय पूज्यपाद श्री जयन्तीदास जी म० ने तीन महीने की घोर तपस्या कर रखी थी बीच मे, तपस्वी जी की तबियत बिगड गई। जी बिगडने पर सथारा ग्रहण करने का विचार किया तो आप (रतनचद जी म०) ने कहा कि तपस्वी जी अभी आप सथारा न करे, जब सथारे का समय आवेगा तब मै कह दूगा सथारा कर लेना। समय आने पर कहा गया, तपस्वी जी ने संथारा कर दिया, तपस्या के सतासी (८७) वे दिन फागुण वदी पचमी को तपस्वी श्री

सु ध्यान लगावे रे ॥ गुण० १८ ॥ भाई बाई तपस्या करे, साधु साध्वी जाणोरे । गिणत सख्या कहा लग करू, बहुत करे धर्म ध्यानोरे ॥ गुण० १९ ॥ साधु श्री दौलतरामजी,* प्रमुख साधु गुणधारी रे । आठ बीस (२८) भेलाथया, महिमावधी अति भारीरे ॥ गुण० २० ॥ देवजात जिम जुड रहा, नर नारी बहु आवेरे । दर्शन सु अखिया ठिरे, शीतल दर्शन सुहावेरे ॥ गुण० २१ ॥ दिन दिन चढता भाव-सुँ, वैराग्य भाव वढमाणोरे । गुण करता पार पामू नही, कहा लग करू बखाणोरे ॥ गुण० २२ ॥ उपदेश देता स्वमुखथकी वन पचासीमो (८५) आयोरे । अर्ध निशा बीता पीछे, सथारो जिन ठायो रे ॥ गुणा० २३ ॥ गुणनी सेणी चढताथका, वेदन सही मन शुद्धरे । सतासीमा व्रत मे, करथा कर्मासु जुद्धरे ॥ गुण० २४ ॥ डेड पहर उनमानसुँ, रवि चढियो आकाशोरे । तिन समय देह छोडी करी, देवलोक प्रतिवासोरे ॥ गुण० २५ ॥ पटयालापुर ने विषे, श्रावक जिन धर्म रागीरे । करन महोच्छव तनु तणा, उत्कण्ठा अति लागी रे ॥ गुण० २६ ॥ फागुण कृष्णा तिथि पचमी,

* पूज्य श्री अमरसिहजी अदि सातो गुरु भाइयो के नाम इस प्रकार है १ श्री दौलत रामजी श्री लोटन दासजी ३ श्री देवीचदजी ४ धनीरामजी ५ श्री राम रतन जी ६ पूज्य श्री अमरसिहजी ७ जयती दासजी । श्री दौलतरामजी आदि अठाइस सत पटयाला पधारे हुए थे, श्री विजयानन्द सूरीश्वर जी म० के गुरु श्री बुद्धिविजयजी म० बूटे राय जी भी पटयाला पधारे हुए थे । ये बूटेरायजी पहले स्थानकवासी सम्प्रदाय के सन्त थे पीछे ये पिताम्बरी सन्त हो गये थे ।

तपस्वी जी देवलोक लीधोरे । जय जय कार तिहां बरततो दुक्कर तप जप की धोरे ।। गुण० २७ ।। श्रावक श्राया देश देशना, धन्य धन्य करें सहु लोकोरे । जिन धर्म ने ऊंचो करचो, मिथ्यात में पड़िया शोकोरे ।। गुणा० २८ ।। संवत् उनीसो चार में, फागुण बदी अष्टमी सहजोरे । श्री मंदर दर्शन पावस्यो, वन्दना माहरी कहजोरे ।। गुण० २९ ।। गुण गाया तपस्वी तणा, पटयालापुर माहीं रे । शिष्य श्री हरजीमलजी तणो, ऋषि रतनचन्द गुण गाई रे ।। गुण वन्तना गुण गाइये ।। ३० ।। इति ।।

गुरुदेव श्री रतनचन्द जी महाराज पटियाला से विच-रते हुए "वामडौली" पधारे, यहाँ पर ज्येष्ठ शुक्ला चौथ सोमवार को भगवान श्री नेमनाथ जी के चोबीस चौक लिखे और सं० १९०५ का चौमासा जलेसर किया, आशोज शुदी २ को २९ पाना का भवन द्वार लिखा । सं० १९०६ का चौमासा लखनऊ किया । सम्वत् १९०७ का चौमासा हाथ-रस किया' इस चौमासे में सुखानन्द मनोरमा की ढाल बनाई, और आश्विन शुक्ला ७ शनिवार को सेठ रतनपाल का चरित्र लिखा । सं १९०७ फागुण शुदी २ शनिवार को प्रश्नोत्तरमाला ग्रन्थ बनाया । सं० १९०८ का चौमासा गढ़ी विलोच (पक्की गढ़ी जिला मुजफ्फर नगर श्यामली के पास) भाई मियां थोभखां की नगरी में किया ।

विक्रम सं० १९०९ चैत्र शुदी १३ से बैशाख वदी २

तक यानी ५ दिन तक सम्बेगी महामुनि श्री "रतन विजय जी" से राजदरबार लश्कर में मूर्ति पूजा के विषय में शास्त्रार्थ होता रहा, गुरु देव जीकी जय हुई, विजय पत्र राजपंडित राधाचार्य जी ने लिखकर गुरुदेव जी को दिया। स० १९०९ का चौमासा सुनाम नगर करके सिंघाणा पधारे, वहा पर पोह शदी २ को मनोहर सम्प्रदाय के सब साधु आर्या इकट्ठे हुए थे। सन्तो में सन्त शिरोमणी धुरन्धर विद्वान् आचार्य श्री पूज्य तुलसीरामजी म० प० श्री गुलाबचन्द जी म० कवि सम्राट प० स्वामी श्री धनीदास जी म० तपस्वी श्री ख्यालीराम जी म० श्री डालूराम जी म० श्री सोभाराम जी सादाराम जी म० नैनसुखदासजी हीरालाल जी आदि सन्त एकत्र हुए। सती शिरोमणी श्री सुन्दर जी तपसण श्री रामकौर जी सीता जी आदि श्रमण सघ एकत्र हुआ मनोहर शास्त्र भण्डार का बांटा बडे प्रेम के साथ हुआ स० १९१० बैशाख शुदी १५ को गुरुदेव जी के शिष्य तपस्वी श्री विनय चन्द जी म० के प्रधान शिष्य पूज्य पाद श्री चतुरभुज जी म० ने कल्प सूत्र लिखा। और स १९१० का चौमासा लोहामण्डी आगरा किया। स० १९११ का चौमासा बिनौली किया यहाँ पर ऋषभदेव भगवान की स्तुति (सज्झाय) बनाई और चार बोल दुर्लभ की सज्झाय बनाई। स० १९१२ का चौमासा हरदुआ गज किया और स० १९१३ का चौमासा डीग (भरतपुर) किया और स०

१९१४ के गदर के समय आप आगरा थे। सं० १९१४ का चौसासा आगरा किया, इस चौमासे में ढाल सागर ग्रन्थ लिखकर मंगसिर वदी ६ गुरुवार को समाप्त किया। ढाल सागर के अन्त में गुरुदेव जी ने एक दोहा लिखा है कि—

दोहा—सम्वत् युग (४) शशी (१) निधि (९) तनु (१)
१९१४, अरगलपुर मंझार ॥

इस चौमासे में श्री चतुरभुज जी म० ने आशोज शुदी १० सोमवार को गोतम कुला ग्रन्थ लिखा सं० १९१५ तपस्वी विनयचन्द जी म० के शिष्य चेतनराम जी ने प्रथम ज्येष्ठ वदी चोथ को बड़ौत में गोतम कुला ग्रन्थ लिखा और हरदुआगंज में कानड़ कठयारे की चौपाई लिखी। सं० १९१५ का चौमासा बड़ौत किया, इस चौमासे में संजय द्वार लिखा और सं० १९१६ का चौमासा अम्बाला किया और सं० १९१७ का चौमासा लस्कर किया और सं० १९१८ का चौमासा आगरा शहर किया। मनोहर सम्प्रदाय की महासती श्री सुन्दर जी तपसण श्री रामकोर जी श्री चन्द्रावल जी ने दादरी चौमासा किया था, घोर तपश्चर्या करने वाली महासती श्री रामकोर जी ने मास खमण (महीने की) तपस्या करी थी यानी श्रावण शुक्ला पंचमी को महीने की तपस्या पचखी और भाद्वा शुदी पंचमी की रात्री को तपसण जी के दर्शन करने को देवता आया, भाद्वा शुदी छठ को पारना किया, तपस्या की सूचना पत्र द्वारा गुरुदेव जी को दी गई,

गुरनी सुन्दरजी ने भाद्वा वदी प्रतिपदा (एकम) बुधवार के
आगरे पत्र दिया जिसका उत्तर गुरुदेव जी ने भाद्वा वदी चौ.
शनिवार को दिया पत्र पर २५ अगस्त सन् १८६१ की मोहर
लगी हुई है, पत्र का उत्तर आगरा माणकचन्द पन्नालाल जी
की कोठी के पते से मंगाया, पत्र की नकल इस प्रकार है।

स्वस्ती श्री दादरी शुभस्थान आर्या जी श्री सुन्दर जी
रामकुवर जी चन्दा जी अप्र समस्त योग्यात्र आगरासु रतन
चन्द चतुरभुज की सुखसाता घणेमानसु बँचनी अत्रानन्द
तत्रानन्द वाछामि। समाचार एक बँचना चिट्ठी तुम्हारी
भाद्वा वदी १ बुधवार की लिखी हुई भाद्वा बदी ४ शनिवार
को पहुँची, समाचार मालूम करा, रामकुवर जी ने मास-
खमण तप करा लिखा सो जाना, बहुत तपस्या करी, पारणे
की सुखसाता का ब्योरा लिखना, आर्या जी पन्ना जी ठाणे
चारसु आगरा चौमासा है, तुमको सुख साता पूछी है, छोटे
बडी की वन्दना सुख साता पूछी है, मनभर जी भी आगरे
ही लोहामडी मे चौमासा करा है, हमने शहर मे चौमासा
करा है, भगवती जी का व्याख्यान होता है और चतुरभुज
जी ने लोहामडी मे चौमासा करा है "रायप्रसेणी जी" का
व्याख्यान करे है। धर्म का उद्यम अच्छा है। रुपा धापां
हरदुआ गंज है, साधु धनीराम जी ठाणे चार से (कवि
सम्राट पूज्यनीय श्री धनीराम जी म० तपस्वी श्री ख्याली-
राम जी म० श्री नैन सुखदास जी म० श्री [illegible]

म०) अमृतसर चौमासा है । साधु जी श्री तुलसीराम जी डालूराम जी सिंघाणा हैं छमच्छरी पीछे चिट्ठी देने के भाव हैं। छमच्छरी भाद्वा शुदी पंचमी सोमवार की होगी…… चिट्ठी सिंघाणा को लिख देना ।

सं० १९१९ का चौमासा देहली किया और सं० १९२० का चौमासा लोहामंडी आगरा किया इस चौमासे में प्रख्यात क्रिया कांडी पूज्य श्री जीवणराम जी महाराज* के ज्येष्ठ शिष्य धुरन्धर विद्वान् श्री आत्माराम जी म० को (जो कि कुछ वर्षों के वाद सं० १९३३) स्थानकवासी सम्प्रदाय को

---

* १ पूय श्री धर्मदास जी म० २ श्री जोगराज जी म० ३ श्री हजारीलाल जी म० ४ श्री लालचन्द जी म० ५ श्री गंगाराम जी म० इनके गुरुभाई हरदयालमल जी थे क्रिया कांडी पूज्य श्री जीवणराम जी म० इनके शिष्य श्री आत्माराम जी म० तपस्वी गणपतराय जी पूज्य श्री दीपचन्द जी म० । पूज्य श्री जीवणराम जी म० सरोहिया गोत्री हीरालाल जी की पत्नी जयता देवी की कुक्षी से नोहर ग्राम में हुआ था, इन्होंने विक्रम सं० १९०६ आशोज शुदी २ को दीक्षा ली थी, इनके गुरु गंगाराम जी म० का स्वर्गवास सं० १९,२ सरगथल ग्राम (कासंडा कासंडी से १ मील है) में स्वर्गवास हुआ था । श्री जीवणराम जी म० का स्वर्गवास फरीदकोट सं० १९२८ कातिक की अमावस्या को हुआ १३१ दुशाले पड़े थे । ७ श्री भगतराम जी ८ पूज्य श्रीचन्द जी म० इनका जन्म सं० १९२४ रोहड़ के मुहाने अग्रवाल वलदेव सहाय की पत्नी वादामो देवी की कुक्षी से हुआ सं० १९४२ आषाढ़ शुदी पंचमी को दीक्षा ली सं० १९७६ भाद्वा वदी २ को डब्बावाली में स्वर्गवास हुआ । पूज्य श्रीचन्दजी म० के शिष्य श्री जवाहरलाल जी तपस्वी श्री विनयचन्द जी तपस्वी श्री पन्नालाल जी आदि हुए । तपस्वी श्री पन्नालाल जी म० शिष्य कवि सम्राट श्री चन्दन मुनि जी

।

छोडकर तपागच्छ मे मिल गये थे वही श्री आत्माराम जी म० श्री मद्विजयानन्द "आत्मानन्द" सूरीश्वर जी के नाम से प्रख्यात हुए)को विद्या दान दिया, जैन आगमो के प्रकांड विद्वान बनाये । इस बात को स्वय श्री आत्मानन्द जी म० ने "तत्त्व निर्णय प्रसाद" ग्रन्थ के प्रारम्भ मे अपने जीवन चरित्र मे लिखा है कि स० १६२० मे "मैने गुरुदेव पूज्य श्री रतनचन्द जी महाराज से बहुत सूत्रो को पढा यहा पर मेरे को अपूर्व ज्ञान की प्राप्ती हुई । मलेर कोटला वाले प० कवि चन्दूलाल जी ने आचार्य श्री विजयानन्द जी म० के जीवन चरित्र मे लिखा है कि आनन्द विजय जी म० ने "पढे ग्रन्थ बहु जैन के, रतनचन्द के पास । अर्थ सुन उन्ही के हर्षा या" प० मुनि श्री चन्द्रभान जी को भी आपने पढाया था ।

गुरुदेव जी महाराज के शिष्यादि का परिवार

गुरुदेव श्री रतनचन्द जी म० के श्री पूर्णचन्द जी मुनि श्री अमरचन्द जी पूज्य पडित श्री कंवरसेन जी म० पूज्य पाद तपस्वी श्री विनयचन्द जी म० आदि बाइस शिष्य हुए । गुरुदेवजी के ज्येष्ठ गुरु भ्राता का नाम "श्री लालजी-मल जी" था ।

सागर गणाधीश मुनिराज श्री श्यामलाल जी महाराज थे गणिजी के शिष्यादिका-परिवार यत्र तत्र विचर रहा है।

तपस्वी श्री विनयचन्द जी म० के शिष्य मनोहर सम्प्रदाय के धुरन्धर विद्वान पूज्य श्री चतुरभुज जी म० चेतनराम जी म० पूज्यपाद श्री भरता जी महाराज (इनका जन्म विक्रम सं० १६१० वैशाख शुक्ला अष्टमी को हुआ था और दीक्षा सं० १६२४ मंगसिर वदी १३ गुरुवार को दोघट में हुई थी और स्वर्गवास भी दोघट में ही सं० १६७३ आषाढ़ वदी अष्टमी को हुआ था। श्री भरता जी म० के शिष्य स्वामी श्री सुखानन्द जी म० इनकी दीक्षा सं० १६४५ मंगसिर वदी अष्टमी को हुई थी। सिद्धान्ताचार्य पं श्री लालचन्द जी म० इनकी दीक्षा सं० १६६३ फागुण वदी ५ रविवार को हुई थी और स्वर्गवास विक्रम सं० २००४ बड़ौत मंडी में हुआ था। तपस्वी श्री जस्सीराम जी। श्री लालचन्द जी म० के शिष्य पं० श्री विमलकुमार जी भजन जी विनयमुनि जी।

गुरुदेव जी सं० १६२० का चौमासा लोहामंडी आगरा करके यत्र तत्र धर्म का प्रचार करते हुए पुनः लोहामंडी पधारे, यहां आने पर गुरुदेव जी के शरीर में खेद बढ़ गया, ज्ञान बल से अपनी आयु निकट आई जानकर कहते हैं कि गुरुदेव जी ने आठ दिन पहले ही जंगल में जाकर श्री मन्दर स्वामी जी महाराज को नमस्कार कर तीर्थंकर देव

छोडकर तपागच्छ मे मिल गये थे वही श्री आत्माराम जी म० श्री मद्विजयानन्द "आत्मानन्द" सूरीश्वर जी के नाम से प्रख्यात हुए)को विद्या दान दिया, जैन आगमो के प्रकाण्ड विद्वान बनाये। इस बात को स्वय श्री आत्मानन्द जी म० ने "तत्त्व निर्णय प्रसाद"ग्रन्थ के प्रारम्भ मे अपने जीवन चरित्र में लिखा है कि स० १९२० में "मैने गुरुदेव पूज्य श्री रतनचन्द जी महाराज से बहुत सूत्रों को पढा यहा पर मेरे को अपूर्व ज्ञान की प्राप्ती हुई। मलेर कोटला वाले प० कवि चन्दूलाल जी ने आचार्य श्री विजयानन्द जी म० के जीवन चरित्र में लिखा है कि आनन्द विजय जी म० ने "पढे ग्रन्थ बहु जैन के, रतनचन्द के पास। अर्थ सुन उन्ही के हृपा था" प० मुनि श्री चन्द्रभान जी को भी आपने पढाया था।

गुरुदेव जी महाराज के शिष्यादि का परिवार

गुरुदेव श्री रतनचन्द जी म० के श्री पूर्णचन्द जी मुनि श्री अमरचन्द जी पूज्य पडित श्री कँवरसेन जी म० पूज्य पाद तपस्वी श्री विनयचन्द जी म० आदि बाइस शिष्य हुए। गुरुदेवजी के ज्येष्ठ गुरु भ्राता का नाम "श्री लालजी-मल जी" था।

सागर गणाधीश मुनिराज श्री श्यामलाल जी महाराज थे गणिजी के शिष्यादिका-परिवार यत्र तत्र विचर रहा है।

तपस्वी श्री विनयचन्द जी म० के शिष्य मनोहर सम्प्रदाय के धुरन्धर विद्वान पूज्य श्री चतुरभुज जी म० चेतनराम जी म० पूज्यपाद श्री भरता जी महाराज (इनका जन्म विक्रम सं० १९१० वैशाख शुक्ला अष्टमी को हुआ था और दीक्षा सं० १९२४ मंगसिर वदी १३ गुरुवार को दोघट में हुई थी और स्वर्गवास भी दोघट में ही सं० १९७३ आषाढ़ वदी अष्टमी को हुआ था। श्री भरता जी म० के शिष्य स्वामी श्री सुखानन्द जी म० इनकी दीक्षा सं० १९४५ मंगसिर वदी अष्टमी को हुई थी। सिद्धान्ताचार्य पं श्री लालचन्द जी म० इनकी दीक्षा सं० १९६३ फागुण वदी ५ रविवार को हुई थी और स्वर्गवास विक्रम सं० २००४ वड़ौत मंडी में हुआ था। तपस्वी श्री जस्सीराम जी। श्री लालचन्द जी म० के शिष्य पं० श्री विमलकुमार जी भजन जी विनयमुनि जी।

गुरुदेव जी सं० १९२० का चौमासा लोहामंडी आगरा करके यत्र तत्र धर्म का प्रचार करते हुए पुनः लोहामंडी पधारे, यहां आने पर गुरुदेव जी के शरीर नें खेद वढ़ गया, ज्ञान वल से अपनी आयु निकट आई जानकर कहते हैं कि गुरुदेव जी ने आठ दिन पहले ही जंगल में जाकर श्री मन्दर स्वामी जी महाराज को नमस्कार कर तीर्थंकर देव

को साक्षी कर सयम मे लगे हुए दोषों की आलोचना की पुन. स्थानक में आकर शरीर से मोह ममता तोड़कर विक्रम स० १६२१ वैशाख शुक्ला द्वादशी बुधवार को सथारा कर दिया और श्रावक भाइयो से कह दिया कि "अब मेरा वैशाख शुदी पूर्णमासी शनिवार को दो बजे स्वर्गवास हो जायेगा" गुरुदेव की वानी सुनकर तथा सथारा करा देखकर धर्म प्रेमी सज्जनो की आखो से अश्रुधारा (आसु) वह चली और प्रस्पर (आपस मे) कहने लगे कि "अब हमारे नायक गुरु-देव जी हमे विलखता छोडकर स्वर्ग लोक को चले जायेंगे" गुरुदेव जी ने सघ को विलखता देखकर उपदेश देना आरम्भ किया और कहा कि "हे भव्यात्माओ ! सावधान हो जाओ शोक (दुख) से चित को मलीन मत बनाओ। ससार मे जो उत्पन्न हुआ उसको मरना अवश्य है। यह तन तो क्षण भगूर नाशमान एव पानी के बुलबुले के समान है। आया सो जायेगा, राजा रक फकीर। एक सिघासण चढ़ चले, दूजे बन्धे जजीर ॥१॥ राजा राणा छत्रपति, हाथी के अस-वार। मरना सब को एक दिन, अपनी अपनी बार ॥१॥ दलबल देवी देवता, मात पिता परिवार। मरती वरया जीव को, कोई न राखन हार ॥३॥ जाया ते मरसी सही, फूले सो कुमलाय। उगे सोही आथमे चिने सोय ढह जाय ॥४॥जातस्य ही ध्रुव मृत्यु ॥

पुत्र को पिता का तथा माता को प्यारी सन्तान का और सन्तान को प्यारी माता का, पतिको पत्नी का और पत्नीको पतिदेव का गुरुगुरनी को चेला चेली का और का चेला चेली को गुरु गुरनी का अर्थात् प्रत्येक(हर एक) व्यक्ति को अपने प्रिय जन का वियोग देखना ही पड़ता है। किन्तु जो ज्ञानी एवं समझदार होते हैं वह मोह में नहीं पड़ा करते। इस नाशमान संसार में कोई किसी का नहीं, संसार तो सराय (धर्मशाला) है, जैसे सराय में सन्ध्या के समय अनेक स्थानों से आये हुए पथिक (यात्री) लोग एक जगह मिलजुल कर बैठते एवं वार्तालाप करते हैं और परस्पर इतना स्नेह बढ़ा लेते हैं कि जिसकी कोई सीमा (हद) नहीं। पुनः प्रातः काल होते ही वे सज्जन जहां अथवा जिधर जाना चाहते हैं उधर ही चले जाते हैं, कोई किसी के साथ नहीं जाते। भव्यात्माओ! तुम तो समझदार ज्ञानवान एवं विचारवान हो, यह सब कुछ जानते हुए भी तुम अश्रुपात आंसु बहा रहे हो नहीं ऐसे मत करो धैर्य धारन करो, सभी दिव्यात्माओं ने "या तीर्थंकर गणधरादिकों ने भी इस पंच भौतिक शरीर को छोड़ा है। मेरे विषय में भी बस तुम लोग यही समझ लो। मेरी तो तुम भाइयों को बस यही अन्तिम शिक्षा है कि तुम हर समय धर्म पर दृढ़ रहना, ऐसा कार्य करना जिससे जिन शासन की उन्नती होवे, भेदभाव को छोड़कर परस्पर प्रेम से रहना, यह कहकर (शिक्षा देकर)

गुरुदेव जी ने मौन धारन कर लिया और समाधी भाव मे लीन हो गये। अन्तिम आखिरी वह चौथा शनिवार का दिन भी आ गया और वह काल कराल की अशुभ घडी भी आगई जो सभी पर आया करती है और आवेगी अर्थात जिसकी प्रतीक्षा मे गुरुदेव जी सथारा करके ध्यान मे अडिग बैठे हुए थे। वैशाख शुदी पूर्णमासी शनिवार दिन के दो बजे अपने प्रिय पोते चले श्री चतुरभुज जी आदि साधु साध्वी वर्ग एव श्रावक श्राविकाओ को बिलखते छोडकर इस क्षण भगूर देह को त्याग कर स्वर्ग लोक को पधार गये। यह काल तो ऐसा बली एव जबरदस्त है कि "जहेव सिहो मिय गहाये" यानी जैसे मृगो की डार (पक्ति) मे से सिह मृग शावक (बच्चे) को उठाकर ले जाता है ऐसे ही माता पिता भाई बन्धु स्त्री पुत्रादि वर्ग के बीच मे से इस जीव को कालरूपी सिह उठाकर ले जाता है "काल बली की भारी माया, इसने सब का करा सफाया"। गुरुदेव जी के स्वर्गारोहण से समाज मे शोक का सम्राज छा गया, यह शोक की लहर दावानल की भाति समस्त शहर तथा ग्रामो के कोने कोने मे फैल गई। गुरुदेव जी के स्वर्गवास से जैन श्री सघ लोहामडी आगरा को बहुत ही घना खेद हुआ, तथा समाज को बहुत जोर का धक्का लगा। जनता अश्रुपात करने लगी, धैर्य धारन करते हुए पूज्य श्री चतुरभुज जी

महाराज* ने संघ को शान्तवना दी और कहा कि "भाइयो ! अब आंसु बहाने या दुख मानने से कोई लाभ नहीं, गुरुदेव की दिव्यात्मा दिव्यमूर्ति आंखों से अब ओझल हो गई है संसार की स्थिति बड़ी विचित्र है जो कि सुख दुख हर्ष शोक के भंवर में फंसी हुई है, शरीर धारी क्षण क्षण में विपरीत अनुभवों को करता रहता है, ये क्षणिक एवं नाशमान हैं। गुरुदेव जी समाज के सूर्य थे जो कि आज अस्तता को प्राप्त हो गये, अब तुम सब भाई शान्ति से काम लो और गुरुदेव के नाम की कोई ऐसी संस्था खोलो जिससे जनता को ज्ञान ध्यान की प्राप्ति हो। लोहामंडी के श्री संघ ने अन्तिम (दाह) संस्कार किया और गुरुदेवजी की यादगार के लिए लोहामंडी आगरा के श्री संघ ने गुरुदेवजी की छतरी (समाधी) बनायी और "श्री रतनमुनि जैन हायर सेकेण्डरी स्कूल" "श्री रतनमुनि जैन गर्ल हायर सेकेण्डरी स्कूल" तथा श्री वीर पुस्तकालय और "श्री रतनमुनि जैन कालेज" खोल रखा है। लोहामंडी आगरा श्री संघ ने गुरुदेवजी की सत् शिक्षाओं का अच्छा लाभ लिया और शुभ लाभ लेने में ही लग रहे हैं। गुरुदेवजी

*पूज्यपाद श्री चतुरभुज जी का जन्म कुमेर ग्राम में राजपूत जीवाराम जी की धर्मपत्नी सरूपादेवी की पवित्र कुक्षी से हुआ था सात वर्ष की आयु में गुरुदेव जी की शरण आ गए थे, बाल्यावस्था में दीक्षा ली और सं० १६३३ भाद्रा सुदी ६ को लोहामंडी आगरा में अचानक ही स्वर्गवास हो गया, इनकी राम ...हानी बहुत बड़ी है।

उदय तिथि को माना करते थे और उदय काल मे आई हुई तिथि भाद्वा शुदी पचमी को छमच्छरी किया करते थे और अपने सघ को भी उदय काल मे आई हुई भाद्वाशुदी पचमी को छमच्छरी करने की आज्ञा दे गये थे । लोहामडी आगरा का श्री सघ बडी वीरता के साथ अब भी किसी के दबाव मे न आकर वही उदयकाल मे आई हुई उदय तिथि भाद्वा शुदी पचमी को छमच्छरी करता है । ऐसा श्री सघ ही गुरुदेव की आज्ञा का पालन करने वाला आत्म कल्याण कर सकता है ।

ॐ शान्ति ! शान्ति ! ! शान्ति ! ! !

गुरुदेव श्री रतनचन्दजी महाराज

गुरुदेवजी के स्वर्गवास के समाचार आचार्य श्री आनन्द विजय जी म० ने सुने ।

विक्रम सम्वत् १९५८ का छपा हुआ "तत्व निर्णय प्रसाद" ग्रन्थ मे आचार्य श्री मद्विजय वल्लभ सूरीजी ने आचार्य श्री विजयानन्द (आत्माराम) जी म० के जीवन चरित्र पृष्ठ ८६ प० २८ मे लिखा है कि—

"श्री आत्मारामजी म० जगरावा आये वहाँ पर चौथमल्ल के पत्र से अपने उपकारी विद्या गुरु श्री रतनचन्द म० का स० १९२१ ज्येष्ठ मास मे (पजाब में प्रसिद्ध प्रविष्टा ज्येष्ठ मास यानी वैसाख शुक्ला पूर्णमासी से पहले ही लग चुका था) स्वर्गवास होना सुनकर बहुत अफसोस किया अपने ज्ञान बल से अफसोस दूर कर जगरावां से लुध्याना आये ।"

इत्यलम्

श्री पूज्य मनोहर दास जी महाराज की सम्प्रदाय की पट्टावली

(१) भगवान श्री महावीर स्वामी–आप क्षत्रिय कुण्डन पुर के क्षत्रिय कुल भूपण ज्ञात वंशीय महाराजा सिध्दार्थ के पुत्र थे, आप माता त्रिशाला के लाल थे। आपका जन्म चैत्र शुक्ला त्रियोदशी को हुआ था, आपने तीस वर्ष की आयु में गृहस्थ का त्याग कर दीक्षा धारन की साड़े बारह वर्ष यानि बारह वर्ष ५ मास १५ दिन तक घोराति घोर तपश्चर्या कर केवल ज्ञान प्राप्त किया, साड़े उणतीस वर्ष तक भारत वर्ष के कौने कौने में भ्रमण कर सत्य अहिंसा (दयामय) धर्म का प्रचार किया, हिंसक यज्ञों को जड़ से उखाड़ फैंका। आपके इन्द्रभूति (गोतम) स्वामीजी श्री सुधर्मा स्वामी जी आदि चौदह हजार शिष्य एवं चन्दन बाला जी आदि छतीस हजार शिष्यायें बनी। बहत्तर वर्ष की आयु भोगकर कार्तिक की अमावस्या को निर्वाण पद प्राप्त किया

(२) श्री इन्द्रभूती (गोतमस्वामी) जी आप राजगृहीके निकट " गोबर ,, ग्राम के रहनेवाले ब्राह्मण थे। आप के पिता का नाम ,, वसुभूति " और माता का नाम "पृथ्वी देवी" था। पचास वर्ष की आयु में आपने दीक्षा धारन की भगवान श्री महावीर स्वामी के पट्टधर शिष्य एवं प्रथम

गणधर बने, साढे उणतीस वर्ष तक सेवा कर ज्ञान ध्यान जप तप करते हुए कातिक शुक्ला प्रतिपदा को केवल ज्ञान प्राप्त किया, बारह वर्ष तक केवल पर्याय मे रहकर बाणवे वर्ष की आयु मे वीर निर्माण स० १२ मे मुक्ति गये।

(३) श्री सुधर्मा स्वामी जी—आप कोलाक सन्नी वे के रहने वाले ब्राह्मण थे, आपके पिता का नाम "धम्मिल, (धवलसेन) था और माता का नाम "भद्दिला" (भद्रादेवी) था, आपने पचास वर्ष की आयु मे दीक्षा धारन की, भगवान श्री महावीर स्वामी के पचम गणधर बने, आठ वर्ष तक केवल पर्याय मे रहकर पचास वर्ष सयम पाल कर सौ वर्ष की आयु मे वीर निर्वाण स० वीस मे मुक्ति गये।

(४) चरम (अन्तिम) केवली श्री "जम्बू" स्वामी जी— आप राजगृही के रहने वाले काश्यप गोत्री सेठ "ऋषभ दत्त" के पुत्र और माता "भद्रा" (धारणी) के लाल थे, सोलह वर्ष की आयु मे आठ रमनी तथा निनाणवे (६६) क्रोड धन को छोडकर पाचसो छब्बीस जनो के साथ श्री सुधर्मा स्वामी के पास दीक्षा धारन की, बारह वर्ष तक विद्याध्ययन कर आठ वर्ष तक आचार्य पद पर रहकर केवल ज्ञान प्राप्त किया चुंवालीस (४४) वर्ष तक केवल पर्याय में रहकर अस्सी वर्ष की आयु मे वीर निर्वाण स० ६४ चोसठ मे मुक्ति गये। भगवान श्री महावीर निर्वाण स० इकतीस (३१) मे राजा कोणिक (अजातशत्रु) के

पुत्र उदाई राजा ने पाटलीपुत्र (पटना नगर) वसाया, वीर निर्वाण सं० इकसठ (६१) में नापित (नाई) कुलोत्पन्न प्रथम नन्द नाई को पटना के मंत्रियों ने राजा वनाया, पटना की गद्दी पर नो नन्द राजा हुए।

(५) श्री प्रभव स्वामी जी—आप विन्ध्याचल पर्वत के नृकट जयपुर के कात्यायन गोत्री राजा "विजयसेन" के पुत्र थे, पिता भ्राता से अनवन हो जाने के कारन घर को छोड़ जंगलों पहाड़ों में रहकर एक वड़े नामीग्रामी डाकू वन गये, पांच सो (५००) डाकुओं के साथ श्री जम्बू जी के वैराग्य मय उपदेश को सुनकर जम्वू जी के साथ ही दीक्षा ले ली। वीस वर्ष तक विद्याध्ययन कर चुँवालीस (४४) वर्ष तक आचार्य पद पर रहे और ग्यारह वर्ष तक युग प्रधानाचार्य पद पर रहे एक सो पांच (१०५) वर्ष कीं आयु में वीर निर्वाण सं० पछत्तर (७५) में छवीसवें स्वर्ग में गये।

(६) श्री शयंभवस्वामी जी—आप राजगृही के रहने वाले वेद वेदान्त के ज्ञाता वत्स गोत्री ब्राह्मण थे अठाइस वर्ष कीं आयु में आपने प्रभवस्वामी के पास दीक्षाली, ग्यारह वर्ष तक चोदह पूर्वों का ज्ञान सीखते रहे, तेइस वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, वासठ वर्ष तीन मास तीन दिन की उमर में वीर निर्वाण स० ९८ वें में स्वर्गवासी हुए।

(७) आर्य श्री यशोभद्र स्वामी जी—आप तुंगयायन गोत्री थे, आपने वाइस वर्ष की आयु में दीक्षा ली, चोदह

वर्ष तक विद्याध्ययन किया, पचास वर्ष तक आचार्य पद पर रहे छासी वर्ष चार मास चार दिन की आयु मे वीर निर्वाण स० १८८ मे स्वर्गवासी हुए।

(८) श्री सम्भूत विजय स्वामी जी–आप माढर गोत्री ब्राह्मण थे, बियालीस वर्ष की आयु मे आपने दीक्षा ली औ चालीस वर्ष तक गुरु सेवा कर जपत कर पूर्वो का ज्ञा प्राप्त किया, आठ वर्ष तक आचार्य पद पर रहे नब्बे (६० वर्ष पाँच मास पाच दिन की आयु मे वीर निर्वाण स एक सो छप्पन (१५६) मे स्वर्गवासी हुए।

(६) पचमश्रुत केवली श्री भद्रवाहु स्वामी जी–आपका जन्म प्रतिष्ठानपुर नगर मे हुआ था। आप प्राचीन गोत्री ब्राह्मण थे। आपने सैतालीस (४७) वर्ष की आयु में दीक्षा ली अठारा वर्ष तक पूर्वो की विद्या पढी, चौदह वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, अटत्तर वर्ष सातमास सात दिन की आयु भोग कर पन्दरह दिन का निर्जल अनसन कर कलिग देश के पर्वत पर प्रतिमा (ध्यान) धर कर वीर निर्वाण स० १७० मे स्वर्गवासी हुए तेइसवे स्वर्ग में गए। वीर निर्वाण स० १५४ मे मोरी वशीय महाराज चन्द्रगुप्त ने चाणक ऋषि की प्रेरणा से पाटलीपुत्र (पटना) की राजगद्दी प्राप्त की भद्रबाहु स्वामी से सोलह सुपनो का अर्थ पूछा पश्चात् सयम ले वीर निर्वाण स० १८४ मे स्वर्गवासी हुए।

(१०) महान् ब्रह्मचारी "श्री स्थूलभद्र जी स्वामी—

आप गोतम गोत्री थे, आपके पिता "शकडाल" नोवें नन्द राजा के प्रधान मंत्री थे आपकी माता का नाम "लाछल देवी" था, आपका जन्म वीर निर्वाण सं० ११६ में हुआ था, तीस वर्ष की आयु में दीक्षा ली, चोबीस वर्ष तक पूर्वों की विद्या पढ़ी, दस पूर्व का ज्ञान अर्थ सहित पढ़ा, और चार पूर्व का ज्ञान मूल मात्र पढ़ा, पैंतालीस वर्ष तक आचार्य पदारूढ़ रहे। निन्याणवें (६६) वर्ष नौ मास नो दिन की आयु भोगकर वैंभार गिरि पर्वत पर पन्दरह दिन का संथारा कर वीर निर्वाण सं० २१५ में स्वर्गवासी हुए, बाइसवें स्वर्ग में गये। आपके समय में बारह वर्षों का काल पड़ा था।

(११) श्री आर्य महागिरि सूर स्वामी जी—आपवच्छ गोत्री ब्राह्मण थे। आपने तीस वर्ष की आयु में दीक्षा ली थी, चालीस वर्ष तक जप तप एवं विद्याध्ययन किया, तीस वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। सो वर्ष पाँच मास पांच दिन की आयु में वीर निर्वाण सं० २४६ में स्वर्गवासी हुए।

(१२) आर्य श्री सुहस्ती सूर स्वामी जी—आप वच्छ गोत्री विप्र थे। आपका जन्म वीर निर्वाण सं० १६१ वें में हुआ था सं० २२० में तीस वर्ष की आयु में दीक्षा ली, चोवीस वर्ष तक विद्याध्ययन किया, छियालीस (४६) वर्ष तक आचार्य पद पर रहे सो वर्ष छ मास छ दिन की आयु भोगकर वीर निर्वाण सं० २६२ में स्वर्गवासी हुए।

(१३) श्री सुस्थितसूर स्वामी जी—सुप्रतिबुद्ध स्वामी—

जी—आप काकन्दी नगरी के व्याघ्रापत्य गोत्री थे, आपने तीस वर्ष की आयु मे दीक्षा ली, सतरह वर्ष तक सूत्र सिद्धान्त का ज्ञान पढ़ा, अड़तालीश वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, छाणवे वर्ष की आयु मे वीर निर्वाण स० २४० मे कुमार गिरि पर्वत पर स्वर्गवासी हुए। प्रथम कालकाचार्य जी—इनका जन्म वीर निर्वाण स० (२८०) में हुआ और वीर नि० स० ३०० यानी २० वर्ष की आयु में दीक्षा ली और वीर नि० स० ३३५ मे आचार्य पदारूढ हुए। वीर नि० स० ३७६ मे स्वर्गवासी हुए। दूसरे कालकाचार्य जी वीर निर्वाण स० (४५२) मे हुए। ये धारानगरी के राजा "वीर सिंह" के पुत्र थे माता का नाम "सुरसुन्दरी" (गुणसुरी) था। उन्होंने अपनी प्यारी बहन सरस्वती के साथ दीक्षा ली थी।

(१४) आर्य श्री इन्द्रदिन्न (इन्द्रदत्त) सूर स्वामीजी—आप कौशिक गोत्री ब्राह्मण थे, आपने छोटी सी आयु में दीक्षा ले ली थी, ब्यासी (८२) वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। वीर निर्वाण स० (४७२) चारसो बाइस मे स्वर्गवासी हुए।

(१५) श्री आर्य दिन्न सूर स्वामी जी — आप गौतम गोत्री थे। आपने तीस वर्ष की आयु मे दीक्षा ली, बतीस वर्ष तक विद्याध्ययन कर पिचपन (५५) वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, एकसो सतरा (११७) वर्ष की आयु मे वीर

निर्वाण सं० चारसो सतन्तर (४७७) में स्वर्गवासी हुए। वीर निर्वाण सं० चारसो सत्तर (४७०) उज्जयिनी की राजगद्दी पर महाराजा विक्रमादित्य वैठे थे।

(१६) श्री आर्य सिंह गिरि सूर स्वामी जी – आपको ज्ञाति स्मरण ज्ञान था, वहत्तर वर्ष तक आचार्य पद पर रहे. वीर निर्वाण सं० पाँचसो उणंचास (५४६) में स्वर्गवासी हुए।

(१७) श्री वयर (वज्र) स्वामी जी—आपको भी जाति स्मरण ज्ञान था, आप गोतम गोत्री थे, आपका जन्म वीर निर्वाण सं० चारसो छाणवें (४६६) में हुआ था आपने आठ वर्ष की आयु में यानी वीर निर्वाण सं० पांचसो चार (५०४) में दीक्षा ली चुँवालीस (४४) वर्ष तक विद्याध्ययन करते रहे, छतीस वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, अठासी वर्ष सात माह सात दिन की आयु में वीर निर्वाण सं० ५८५ पांचसो पचासी में स्वर्ग पधारे।

(१८) श्री वज्र सेन सूर स्वामीजी—आप भारद्वाज गोत्री ब्राह्मण थे, आप का जन्म वीर निर्वाण सं० पांचसो दो (५०२) में हुआ था। ३२ वर्ष की आयु यानी वीर निर्वाण सं० पांचसो चोंतीस (५३४) में दीक्षा ली पचास वर्ष तक ज्ञान ध्यान जप तप कर वीर निर्वाण सं० ५८५ में आचार्य वने, छतीस वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, एकसो अठारह (११८) वर्ष की आयु में वीर निर्वाण सं०

इसो इकीस वर्ष मे स्वर्गवासी हुए। वज्र स्वामी श्री वज्रसेनस्वामीजी के समय मे एक बारह वर्ष का और दूसर सात वर्ष का अकाल पड़ा था। इस घोर काल के विषय मे एक कवि ने लिखा है कि दोहा—सब दुनिया का सुख गया, दुख व्यापा असमान। अन्न बिहुना मानवी, तजे प्राण कुल कान ॥१॥ भयकर ससार मे वरता हाहाकार भूखे कल्पित देखिये, पशु पखी नर नार ॥२॥ तजी कन्त क कामनी, तजी कामनी कन्त। तजी मात सन्तान को, तजे जात (पुत्र) सामन्त ॥३॥ ठग फासीगर चोरटा, लूट खोस धन खाय। दुर्भिक्ष महा दुकाल मे, नियम धर्म सब जाय ॥४॥ उपसर्ग अति हुआ, भूखा नर तिर्यञ्च। हिसक हने सु साधु को, निर्दयी दया न रञ्च ॥५॥ तब श्रावक मिलि एकठा, करी अर्ज अरदास। बस्ती मे वासा बसो, तजो आज वनवास ॥६॥ उस समय अति उत्तम क्रियापात्र जो साधु साध्वी थे वे सथारा (अन्न का त्यागन कर) समाधि सहित कालकर स्वर्ग मे जा विराजमान हुए। जो सिथिला चारी रहे उन्होने ज्यो त्यो करके अपना पेट भरना शुरु किया।

(१९) आर्य श्री रोह गुप्त सूर स्वामीजी—आप वशिष्ट गोत्री ब्राह्मण थे।

(२०) श्री पुस गिरि सूर स्वामी जी (पुष्पगिरि सूर स्वामी जी।

(२१) श्री फल्गुमित्र सूर स्वामीजी—आप गोतम गोत्री थे, आपने चोदह वर्ष की आयु में दीक्षा ली तेरह वर्ष तक विद्याध्ययन किया उणंचास (४९) वर्ष तक आचार्य पद पर रहे छयंत्तर (७६) वर्ष सात मास सात दिन की आयु में स्वर्गवासी हुए।

(२२) श्री धरणीधर सूर स्वामीजी—आप वशिष्ठ गोत्री थे।

(२३) श्री शिवभूति सूर स्वामीजी।

(२४) श्री आर्य भद्र सूर स्वामीजी।

(२५) श्री आर्य नक्षत्र सूर स्वामी जी—आप काश्यप गोत्री थे।

(२६) श्री नागेन्द्र सूर स्वामी जी—आप गोतम गोत्री थे।

(२७) श्री उपरगणि सूर स्वामी जी।

(२८) श्री देवर्द्धि (देवढ़ी) क्षमा श्रमण सूर स्वामी जी—आप काश्यप गोत्री राजकुमार थे, आपकी माता का नाम "कलावती" और पिता का नाम "कामर्धि देव" था। आपने पंदरह वर्ष की आयु में दीक्षा ली, बावन वर्ष तक गुरु की सेवा कर ज्ञान ध्यान जप तप संयम द्वारा आत्मा को निर्मल बनाई, चोंतीस वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, आपके सो शिष्यों का परिवार था, वीर निर्वाण सं० ९८० वल्लभी पुरी नगरी में संघ को एकत्र करके विक्रम सं०

पांचसो दस ५१० मे जैन आगमो को लिखवाया लीपं वद्ध करवाया वीर निर्वाण स० एक हजार में शत्रुजय पर्वत पर सथारा कर स्वर्गवास प्राप्त किया। वीर निर्वाण स० ९९३ वे भावड गच्छी तीसरे कालका चार्यजी ने कारन वस अनादि काल से होती हुई भाद्वाशुदी पचमी की छमच्छरी मेटकर चोथकी छमच्छरी करी उनकी प्रतिज्ञा थी कि "मै अगले वर्ष यानी नोसो चुराणवे (९९४) की साल मे पचमी को छमच्छरी करूगा" किन्तु वह ऐसा नही कर सके कारन की स० १९९४ वे वैशाखशुदी चौथ रोहिणी नक्षत्र मे उनका स्वर्गवास हो गया, उनके शिष्य ने वह चौथ की ही छमच्छरी ले ली, बस तब से ही जैन समाज मे फूट का बीज बोया गया।

(२९) श्री चन्द्र सूर स्वामी जी।

(३०) श्री समन्तभद्र सूर स्वामी जी—आपसे विद्याधर शाखा हुई।

(३१) श्री धर्मघोप सूर स्वामी जी—आपसे धर्मघोप गच्छ की उत्पत्ती हुई। आपने आठ वर्ष की आयु मे दीक्षा ली थी, पन्दरह वर्ष तक विद्याध्ययन किया, अठत्तर (७८) वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, एक सो एक वर्ष की आयु मे स्वर्गवासी हुए।

(३२) श्री जयदेव सूर स्वामी जी।

(३३) श्री विक्रम सूर स्वामी जी।

(३४) श्री देवानन्द सूर स्वामी जी ।

(३५) श्री विद्याधर प्रभु सूर स्वामी जी ।

(३६) श्री नरसिंह सूर स्वामी जी ।

(३७) श्री समुद्र सूर स्वामी जी ।

(३८) श्री विबुध सूर स्वामी जी ।

(३९) श्री परमानन्द सूर स्वामी जी—आप सं० ११२३ में हुए ।

(४०) श्री रविप्रभ सूर स्वामी जी ।

(४१) श्री जयानन्द सूर स्वामी जी ।

(४२) श्री उचित सूर स्वामी जी—आप सं० ११८१ में हुए ।

(४३) श्री प्रौढ़ सूर स्वामी जी—आप सं० १२३५ में हुए ।

(४४) श्री विमलचन्द्र सूर स्वामी जी—आप का स्वर्गवास उज्जैन में हुआ था ।

(४५) श्री नागदत्त सूर स्वामी जी—आपके नाम से ही नागोरी गच्छ प्रसिद्ध हुआ, आप पाटन के रहने वाले जाति के श्री श्रीमाल थे । आपने अपने गुरु विमलचन्द्र जी म० के वैराग्यमय उपदेशों को सुनकर विक्रम सं० १२७८ नागोर में दीक्षा ली और नागोर में सं० १२८५ वैशाख शुक्ला तीज को आचार्य पद पर विराजमान हुए, आपके आचार्य पद महोच्छव पर श्री श्रीमाल तातेड गंधी चोरडिया आदि सब ओसवाल आये थे ।

दोहा—सम्वत् विक्रम रायको, बाण (५) सिद्ध ८ जुग (२) एक ।१२८५। वैशाख शुक्ल तिथि तीज को, पट्ट धर थया सु टेक ॥१॥ आपने मरुधरा के महा तेजस्वी सुरसेन राजा को उपदेश देकर जैनी बनाया था। बस तब से ही सुरसेन राजा की सन्तान सुराना कहलाने लगे अर्थात् सुरसेन राजा की सन्तान सुराना ओसवाल कहलाने लगे।

दोहा—सुर राजा प्रति बोधिया, सुराना परिवार। ओस वंस मे थापिया, जिनधर्म उन्नतकार ॥१॥ तिहांथी नागोरी कहा, शाखा नाम जो यह। नागोर नगर में विस्तरो, पाटो पाट गिनेह ॥२॥ आपके त्याग वैराग्य एवं तपोबल से आकृष्ट होकर भुवनपति देवता "रतनचूड" आप की सेवा मे रहने लगा था।

(४६) श्री धर्म सूर स्वामी जी।
(४७) श्री रतनसिंह सूर स्वामी जी।
(४८) श्री देवेन्द्र सूर स्वामी जी।
(४६) श्री रतनप्रभ सूर स्वामी जी।
(५०) श्री अमर प्रभ सूर स्वामी जी।
(५१) श्री ज्ञानचन्द्र सूर स्वामी जी।
(५२) श्री मुनि शेखर सूर स्वामी जी।
(५३) श्री सागरचन्द्र सूर स्वामी जी।
(५४) श्री मलयचन्द्र सूर स्वामी जी।

(५५) श्री विजयचन्द्र सूर स्वामी जी ।

(५६) श्री यशवन्त सूर स्वामी जी ।

(५७) श्री कल्याणचन्द्र सूर स्वामी जी ।

(५८) श्री शिवचन्द्र सूर स्वामी जी ।

(५९) श्री हीरागर जी स्वामी—आप नागोर के रहने वाले श्री श्रीमाल थे आपके पिता का नाम "मालोजी" और माता का नाम "माणक देवी" था आपका जन्म "नोलाई" ग्राम में हुआ था। आपने अपने गुरुदेव श्री शिवचन्द्र जी की आज्ञा से क्रियोद्धार किया, जगह २ विचर कर खूब ही मिथ्यात का खंडन किया, आपके सत्योपदेश से प्रभावित होकर बहुत से सज्जनों ने मिथ्यात छोड़ दिया, सत्य जैन धर्म को स्वीकार किया ।

दोहा—भगा भ्रम मिथ्यात का, जगा जैन का जोर ।
हिंसा धर्म उथापकरी, कुमति कदा ग्रह छोड़ ॥१॥

उनीस वर्ष संयम पालकर अन्तिम समय में बीस दिन का संथारा कर उज्जैन में स्वर्गवासी हुए ।

उनसठवे (५९) पाट पर श्री हीरागर जी महाराज हुए। श्री हीरागर जी म० के सन्त पंजाब में जाकर विचरे, खूब ही धर्म का प्रचार किया उनके कितने केपाट के बाद जो सन्त हुए, वह श्यालकोट आदि शहरों में जो यति लोग थे उनके पास आने जाने लगे वही बात हुई कि "मिथ्याति की संगति किया, अशुद्ध बुद्धि मन होय ।" संयम

मे सिथिलता आने के कारण वह फिर यति पूज्य हो गये। उन यतियो मे मे ही वैद्यराज गगाराम जी म० हुए जिनका बनाया हुआ वैद्यक ग्रन्थ "गगयति निदान" है उस ग्रन्थ के अन्त मे जो पट्टावली दी है उसके नो पाट हमारी पट्टावली से मिलते है जो कि इस प्रकार है।

दोहा—उदय भये "हीरागर" (१) रूपचन्द (२) शिप्य तौन। उदित "दिवागर" (३) तप विपे, वैरागिरि" (४) शिप्य चैन ॥१॥ "वस्तुपाल" (५) कल्याण मुनि (६) "भैरवमुनि (७) यति जैन। आचारज गिरि मेरु सम, "नेमचन्द्र" (८) धर धीर ॥२॥ तिनके सुर तरु सम भये, "आशकरण" (९) वर वीर। तिस प्रभ ने शाखा भई, हर्पावत सुख नाम। हर्पचन्द्र मुनिराज 'गुण' करामात को धाम ॥३॥

(६०) श्री रूपचद जी स्वामी—आप नागोर के रहने वाले सुराना ओसवाल थे, आपका जन्म वि० स० १५६७ मे हुआ था आपके पिता का नाम "रयणाशाह" (रतनाशाह) और माता का नाम "शिवादे" था, आपके बाबा का नाक "देवदत्त" था आप अपने चाचा "शाडिलशाह" की गोद गये थे, आपके गोद जाने पर शाह जी के एक "खेतसी" नामक पुत्र हुआ था आपकी धर्म पत्नी का नाम "रूपादे" बाई था। आपने गुरुराज श्री शिवचन्द्र जी म० के वैराग्य भरे उपदेश को सुनकर माता पिता भुवा और

घरवाली की आज्ञा लेकर श्री हीरागर जी और पंचायण सेठ। (यह पंचायण सेठ श्री रूपचन्द जी के छोटे भाई थे, ये भी अपने चाचा शहसमल जी की गोद गये थे। इनका व्याह होने वाला था वान वैठे हुये थे, जव ये सुना कि रूप चन्द जी दीक्षा ले रहे हैं तो आप भी उनके साथ ही विक्रम सं० १५८५ ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को उभरती उठती) हुई यौवनावस्था में यानी अठारह वर्ष की आयु में नो लाख की सम्पत्ति को छोड़कर दीक्षा धारन की उस समय मुगल वंशीय फिरोजी खानदान वाले पातीशाह वादशाह ने अपने मंत्री किशनचन्द को दीक्षा महोच्छव मनाने के लिये भेजा था। आपके दीक्षा लेते ही सरूपा वाई ने श्राविका के व्रत ले लिये, आपने अपने गुरु हीरागर और गुरु भ्राता पंचायण मुनि के साथ कुछ समय के लिये वनवास स्वीकार किया जंगल में रहना, तीसरे पहर वस्ती में गोचरी (आहार) के लिये आना और शेष समय कायोत्सर्ग करके खड़े रहना, गर्मी में सूर्य की आतापना लेना, शर्दी के दिनों में शीत का कष्ट सहना यह आपका नित्य का कर्तव्य हो गया था। आत्म साधन करते हुए विक्रम सं० १५८६ में विकानेर पधारे, यहाँ कमला गच्छी यतियों के श्रावक श्रीचन्द चोरडिया ने अपनी विशाल कोठी उपाश्रय (स्थानक) के नाम कर दी थी, उस ही स्थानक में आपने चौमासा किया। महम शहर के क्रोड़पति सेठ गोवर्धन के मकान पर

चौमासा किया, एक महीने का व्रत किया, इस चौमासे में आपकी घोर तपस्या को देखकर भुवनपति देवता "पूर्ण-भद्र" आपका सेवक बना। आपने अपने ज्ञान ध्यान तपो-बल से एक लाख अस्सी हजार घर जैनी बनाये, उणतीस (२९) वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। आपके पिता "रयणा-शाह" ने भी दीक्षा ले ली थी, आपने अपने पिता जी की अन्तिम समय तक सेवा की (नागोर मे पचास दिन के सथारे में रयणाशाह मुनि स्वर्गवासी बने आपने महम मे शहर (जो कि उज्जैन के पास है) सथारा किया पचासवे दिन स्वर्गवासी हुए।

दोहा—धन्य धन्य रयणाशाह सुत, रूपचन्द ऋषिराय।
जैन धर्म उद्योत किया, भव्यजीव सुखदाय ॥१॥

नोट—रूपचन्द जी म० का विशेष हाल देखना चाहे तो रूपसन्धी मे देखे। ये सन्धी "झुझणु" के जैन भण्डार में सुरक्षित है।

(६१) श्री देवागर (दीपागर) जी स्वामी, आप पारख गोत्री ओसवाल थे, आपका जन्म "कोरड़ा निगम"-ग्राम मे हुआ था, आपके पिता खेतसी जी और माता धनवती जी थी। आपने नागोर मे दीक्षा ली थी। आपने उत्कृष्ट सयम का पालन किया, आपने ज्ञान ध्यान जप तप के बल से भिण्डर आदि ग्रामो मे एक लाख चौरासी हजार घर जैनी बनाये, आप सताइस वर्ष तक आचार्य पद पर रहकर इकीस दिन का सथारा कर मेड़ता शहर मे स्वर्गवासी हुए।

(६२) श्री वयरागर जी स्वामी—आप नागोर निवासी जाति के श्री श्रीमाल थे, आपके पिता का नाम "भल्लराम जी" माता का नाम रतनवती था। आपने नागोर में दीक्षा ली और आचार्य पद भी नागोर में मिला, उनीस वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, ग्यारह दिन का संथारा कर मेड़ता शहर में स्वर्गवासी हुए।

(६३) श्री वस्तुपाल जी स्वामी—आप नागोर निवासी जाति के कडवाणिय ओसवाल थे। पिता का नाम "महाराज' 'माता का नाम "हर्षा देवी" था। आपने नागोर में दीक्षा ली, सात वर्ष तक आचार्य पद पर रहे, सताइस दिन का संथारा कर मेड़ता में स्वर्गवासी हुए।

(६४) श्री कल्याणदास जी स्वामी—आप "राजलदेसर-- के सुराना ओसवाल थे। आपके पिता का नाम "शिवदास-- और माता का नाम "कुशला देवी" था, आपने विकानेर में दीक्षा ली, आचार्य पद नागोर में प्राप्त हुआ, चोबीस वर्ष तक आचार्य पद पर रहे आपके सो शिष्यों का परिवार था। आठ दिन का संथारा कर लाहोर में स्वर्गवासी हुए।

(६५) श्री भैरवदास जी स्वामी—आप नागोर के रहने वाले सुराना ओसवाल थे। आपके पिता का नाम—"तेजसी जी और माता का नाम लक्ष्मी देवी" था। आपने नागोर में दीक्षा ली आचार्य पद भी नागौर में ही हुआ।

बारह वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। दस दिन का सथारा कर सोजत मे स्वर्गवासी हुए।

(६६) श्री नेमिचन्द्र जी स्वामी—आप विकानेर निवासी सुराना ओसवाल थे। आपके पिता का नाम "रायचन्द" और माता का नाम "सजना देवी" था। आपने विकानेर मे दीक्षा ली, नागौर मे आचार्य पद मिला, सतरह वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। सात दिन का सथारा कर उदयपुर मे स्वर्गवासी हुए।

(६७) श्री आशकरण जी स्वामी—आप मेडता के सुराना ओसवाल थे। आपके पिता का नाम "लब्धमल जी और माता का नाम "तारावती" था। आपने अपनी जन्म भूमि मेडता मे दीक्षा ली, नागौर मे आचार्य पद मिला। अठारह वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। फागुण मास मे नौ दिन का सथारा कर स्वर्गवासी हुए।

(६८) श्री सदारग जी स्वामी—आप नागौर के रहने वाले सुराना ओसवाल थे। आपके पिता का नाम "भागचन्द जी माता का नाम यशोदा देवी" था। आप सात वर्ष की आयु मे वैरागी बने थे, माता पिता की आज्ञा से नौ वर्ष की आयु मे नागौर मे दीक्षा ली, पॉच वर्ष मे ही आप धुरन्धर विद्वान सन्त हो गए, आचार्य पदारूढ हुए- आप एक महा प्रभाविक आचार्य हुए, आपके समय मे बादशाह आलमगिरि का राज था। आपके तप तेज की महिमा

का वरनन एक कवि ने इन शब्दों में किया है।

पूज्याचार्य श्री सदारंग जी को घग्घर निशानि

वाग्देवी माता सुबुद्धि दाता, अविचल वुद्धि आपन्दा है।
श्री गुरुध्याऊँ अक्षर पाऊँ, घट में गुण व्यापन्दा है ॥
नागोरी गच्छं, ओपे अच्छं, सदारंग सोहन्दा है।
इन पंचम आरे-क्रिया पाले, भव्य जीव प्रति वोहन्दा है ॥
पाटोधर जाणो गुणे वखाणो, वाणी जग मोहन्दा है।
शशी सोमा कारं वहुजन धारं, सुरज तेज सोहन्दा है ॥
दया जो पाले हिंसा टाले, शुद्ध विधि चालन्दा है।
तीर्थंकर करनी भव भय हरनी, खुब तरह पालन्दा है ॥
कली कालज केशी गोतम जैसी, वाणी विधि उच्चरन्दा है।
तीन तत्व जाणे कषाय न आणे, इन्द्रि पांच गोपन्दा है ॥
भय सात ने छंडे आण न खंडे, छकाया पालन्दा है।
जिन धर्मज मांहे प्रति वोधी शाहे, गर्व घणा गालन्दा है ॥
सदा सुखकारी क्रियाधारी, ज्ञान ध्यान धरन्दा है।
गुण सागर कहिए दर्शन लहिए, दर्शन सेव्या सुखकन्दा है ॥
वाणी सुणता सुमरण करता, पुन्य कमल खिलन्दा है। ॥
श्री गुरु तपस्वी स्तवन करसी, ते नर पार पावन्दा है ॥
सदारंग जी साचो सुगणे जाचो, उमाह चित मांह धरंदा है
तुम पावज फरसे दर्शन कर से, सो दिन सफल करन्दा है।
तुम दर्शन चाहे अंग उमाहे, तुमसुं मन उलसन्दा है।
तुम सतगुरु साचा अविचल वाचा, मोय चित आय ठसंदा है ॥

स्व आगम जाणे भेद बखाणे, मिथ्या दूर करन्दा है ।
सुराणा बंसे उज्वल हंसे, वाणी घन गरजन्दा है ॥
श्री संघ सुहावे दर्शन भावे, जन्म सफल जानन्दा है ।
वर्द्धमान पाटोधर मोटा सूत्रधर, जानी पाट ठवन्दा है ॥
गुणीजन भाखे पिंगल साखे, वछित फल पावन्दा है ।
घरघर निशानी उमगे आनी, कवि जन इस गावन्दा है ॥
जो कोई सुणे सुणावे महासुख पावे, अविचल वास पावन्दा है ।
सदारंग स्वामी महागुणखानी, सेवक को सुख आपन्दा है ॥

आगरे वाले गुरुदेव श्री रतनचन्द जी महाराज ने एक दोहा लिखा है कि—

नागोरी गच्छ है बडा, श्री पूज्य वर्द्धमान ।
लघु भ्राता गुण धार है, मनोहर ऋषि सुजान ॥

(६६) श्री वर्द्धमान जी स्वामी—आप जाखासर के रहने वाले बेद मुहता ओसवाल थे । आपके पिता का नाम "सूरमल" था और माता का नाम "लाडम देवी था। आपकी दीक्षा नागोर मे हुई थी ।

(६६) वे पाट पर श्री पूज्य मनोहर दास जी महाराज —आप नागोर के रहने वाले सुराना ओसवाल थे, आपका जन्म विक्रम स० १६८० के आस पास हुआ माना जाता है । आपका मरुधरा के प्रसिद्ध नगर नागोर के सुराना ओसवाल वंश मे जन्म हुआ था, जब आप गृहस्थ मे थे तब आपके ऊपर लक्ष्मी महारानी की तो अपार कृपा थी ही किन्तु साथ मे सरस्वती देवी की भी पूरी ही कृपा थी।

गृहस्थ में रहकर आपने गृहस्थ धर्म का सम्यक् तया पालन किया, जब आप पूरे वैरागी हो गये तो नागोरी गच्छाचार्य श्री पूज्य सदारंग जी म० के पास दीक्षा धारन करली। गुरु राज से विनय पूर्वक जैन आगमों का अध्ययन किया कुछ ही समय में आप आगमों के धुरन्धर विद्वान वन गये। उस समय मारवाड़ में जो जैन यति थे उनके हृश्य पट पर सिथिलाचार ने खूब ही गहरा अड्डा जमा रखा था, आपको यतिराजों का वह सिथिलाचार पसन्द नहीं आया, अतः यतियों के सिथिलाचार हटाने के लिये सर्व प्रथम मारवाड़ प्रान्त में आपने ही अपने गुरुदेव श्री पूज्य सदारंग जी म० तथा बड़े गुरुभ्राता श्री पूज्य वर्द्धमान जी म० की आज्ञा (आशीर्वाद) ले क्रिया उद्धार का काम अपने हाथ में लिया।

दोहा—सदारंग श्री पूज्य नो, ले आदेश तिवार।
पूज्य मनोहर दास जी, किया क्रिया उद्धार ॥१॥

आपके दूसरे ज्येष्ठ गुरु भ्राता पूज्य तपस्वी श्री खेतसी जी महाराज ने आपके इस पुनित कार्य में पूरा सहयोग दिया, जहां तहां आपके साथ रहे। यति समाज का अज्ञान वस काई की तरह फटता ही चला गया, आपने मारवाड मालवा मेवाड़ गुजरात आगरा आदि स्थानों में भ्रमण कर धर्म प्रचार किया, जोधपुर जयपुर खंडेला खेतड़ी सिंघाणा नारनौल महेन्द्रगढ़ चरखीदादरी भिवाणी तोसाम हांसी

ीया शिष्य लिखा। श्री मिश्रीमल जी म० ने "जैन गुरु वृक्ष" में मनोहर दास जी म० को पूज्य धर्मदास जी म० का शिष्य लिखा है। पं० श्री सुशील मुनि जी ने "जैन धर्म का इतिहास" पृष्ठ ४७३ में लिखा है कि "पूज्य मनोहर दास जी म० पहले तो लोंकागच्छ के यति श्री सदारंग जी म० के पास दीक्षित हुए बाद में क्रियोद्धारक पूज्य श्री धर्मदास जी म० के प्रधान शिष्य बने। सती चन्दन कुमारी जी "हमारा इतिहास" के पृ० २०९ पं० २३ में लिखती हैं कि "पूज्य मनोहरदास जी म० पहले नागोरी गच्छ के प्रसिद्ध यति सदारंग जी के पास दीक्षित हुए थे बाद में पूज्य श्री धर्मदास जी आदि क्रियोद्धारकों के प्रभाव से अत्यन्त आकर्षित हुए, जीवन में एकदम परिवर्तन आगया, यति परम्परा से पृथक होकर शुद्ध साधु सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये।" मेरे को ज्ञात नहीं होता है कि ऐसे धुरन्धर विद्वान साधु साध्वी वर्ग किस आधार पर पूज्य श्री मनोहरदास जी म० को पूज्य धर्मदास जी म० का शिष्य बतला रहे एवं लिख रहे हैं, मनोहर दास जी म० के गुरु श्री पूज्य सदारंग जी म० क्रिया हीन नहीं थे, वैसे वह अपठित भी नहीं थे, ऐसे क्रिया काण्डी विद्वान गुरु को छोड़कर धर्मदास जी म० को गुरु बनाते। श्री पूज्य सदारंग जी म० कितने क्रिया काण्डी एवं विद्वान थे वे सब बातें "सदारंग घग्घर निशानी में देखें।

(७०) पूज्य श्री भागचन्द जी महाराज—आपका

जन्म बिकानेर सुराना ओसवाल कुल मे हुआ था, बालब्र० मे बडे वैराग्य भाव के साथ नारनौल मे श्री पूज्य मनोहर दास जी म० के पास दीक्षा ली आपने स० १७६५ वैशाख शुदी एकादशी सोमवार को कल्याण मदिर स्तोत्र टब्बा क लिखा और स० १७६६ वैशाख कृष्णा द्वादशी शनिवार को आपने भगवती सूत्र पर्याय लिखी। आपके वैसे तो बहुत शिष्य हुए किन्तु दो शिष्य अधिक प्रख्यात हुए। तपस्वी श्री माणकचन्द जी म० और पूज्य श्री सीताराम जी महाराज तपस्वी श्री जी का जन्म हरयाणा। लालपुर ग्राम मे हुआ था, इनके पिता "बाबूराम" गिन्दोडिया थे। इन्होने विक्रम स० १७७५ मे दीक्षा ली थी और बडौत शहर मे स्वर्गवासी हुए थे। पूज्य श्री भागचन्द जी म० के गुरु भ्राता पूज्य श्री नानकचद जी महाराज थे जिनकी दीक्षा स० १७५१ मग-सिर वदी ६ को नारनौल मे हुई थी। सिघाणा शहर के रहने वाले खेमचन्द जी गोविन्दराम जी ने स० १७७५ आशोज शुदी ६ वृहस्पत वार को देहली मे पूज्य श्री नानक चद जी महाराज के पास दीक्षा ली। सम्वत् १७८१ मगसिर शुदी २ को भगवन्त राय जी ने दीक्षा ली। सं० १७८२ मंगसिर वदी २ गुरुवार को मन्नीराम जी म० ने दीक्षा ली। स० १७८७ चैत्र वदी ६ गुरुवार को साहबराम जीने दीक्षा ली। स० १७८८ चैत्र शुदी २ गुरुवार को मोहन लाल जी ने दीक्षा ली। सं०१७९० मंगसिर वदी ६ शुक्रवार को पूज्य

श्री खेमचन्द जी म० के पास लालचन्द जी म० ने दीक्षा ली। सं० १७६२ सिंघाणा में मोजीराम जी ने दीक्षा ली। सं० १८१६ श्रावण शुक्ला ६ गुरुवार को सादाराम जी डेडराज जी तथा परम आदरणीय महापुरुष पूज्यपाद श्री लक्ष्मीचन्द जी म० ने दीक्षा धारन की। कर्मों की गति बड़ी विचित्र है, कि सं० १८१६ माह वदी तीज को कान्धला शहर में एक सवाई के कारन पूज्थ श्री खेमचन्द जी म० श्री गोबिन्दराम जी म० साहबराम जी म० आदि तीन सन्त मुसलमान सैनिकों द्वारा पूछने पर कि तुम हिन्दू हो या मुसलमान हो। सत्य वक्ता मुनिराजों ने फरमाया कि "हम हिन्दुओं के संत हैं" बस इतना सुनते ही उन दुष्ट म्लेछों ने तीनों सन्तों को क़तल कर दिया, सन्त पुरुष आयु पुरी करके स्वर्ग लोक में जा विराजमान हुए। फोज के मालिक (अफ़सर) का कहना था कि कान्धला में जो मुसलमान हों उनतो छोड़ देना और जो हिन्दू हों उनको मार देना (मोत के घाट उतार देना) नव दीक्षित महामुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० श्री सादाराम जी म० तो आयुशेषता के कारन वच गये। सं० १८६३ बैशाख शुदी १५ गुरुवार को पूज्य श्री लक्ष्मीचन्द जी म० के पास बृजलाल जी ने दीक्षा ली सं० १८८१ ज्येष्ठ शुदी अष्टमी शुक्रवार को सिंघाणा में अगरचंद जी ने दीक्षा ली। पूज्य श्री नानकचन्द जी म० के आठ शिष्य हुए जिनके नाम यह हैं श्री रामचन्द्र जी, श्री

मूलचन्द्र जी, श्री भगवन्तराय जी, श्री गोविन्दराम जी, पूज्य श्री खेमचन्द जी, साहबराम जी, मन्नीराम जी, मोहनलाल जी। पूज्य श्री खेमचन्द जी म० के छ शिष्य हुए जिन के नाम इस प्रकार है—धन्ना जी स्वामी श्री लालचन्द जी पूज्य श्री मोजीराम जी म०, श्री सादाराम जी, श्री डेडराज जी, पूज्य श्री लक्ष्मीचन्द जी म०। पूज्य श्री लक्ष्मीचन्द जी के दो शिष्य हुए—श्री बृजलाल जी अगरचन्द जी। सुन्दर जी रामकोर जी आदि सती वृन्द आपकी शिष्या थी।

(७१) पूज्य श्री सीताराम जी महाराज—आपका नारनौल अग्रवाल वश मे जन्म हुआ था आपने पूज्य श्री भागचन्द जी म० के पास दीक्षा ली थी।

(७२) पूज्य श्री शिवराम दास जी (श्योरामदास जी) महाराज—आप देहली के रहने वाले श्री श्रीमाल थे, आपकी जीवन यात्रा के समय मुसलमान बादशाहो की तलवारे चमकती ही रहती थी, एक बार देहली मे मारकाट हुई तो आपकी माता ने आपको फूस के ढेर मे छुपाकर आपकी जान बचाई, दूसरे मारकाट हुई तो आपको तलघर (तहखाने) मे छुपाकर आपके प्राणो की रक्षा की। अन्त में आपने कुतानाशहर मे आकर विक्रम स० १७७९ में आचार्य श्री सीताराम जी म० के पास दीक्षा ली, अन्तिम समय में सिंघाणा मे स्वर्गवास से पहले ही श्रावक भाइयो से कह दिया था कि मेरा जन्म तलवारो की छाया में हुआ था

और मेरी दीक्षा से पहले भी तलवारें चली थी अब स्वर्गवास के समय भी तलवारें चलेंगी, तुम लोग शान्ति एवं प्रेम से काम लेना। आपके चार शिष्य हुए पूज्य तपस्वी श्री देवकरण जी म० पूज्य श्री लूणकरण जी म० वेला वेला तपस्या करने वाले तपस्वी श्री हरजीमल जी म० रामकिशन जी विक्रम सं० १८४० में पूज्य श्योरामदास जी म० ठाणे सात से आगरा पधारे थे। सातों सन्तों के नाम इस प्रकार हैं—पूज्य श्री श्योरामदास जी, हिमताजी, पूर्ण जी, हरी जी, देवकरण जी, लूण करण जी, हरजीमल जी।

दोहा—पूज्य श्योरामदास जी, गुण गहर गम्भीर।
सकल शास्त्रना पाठिया, शूर वीर ने धीर ॥१॥

श्री हिमताजी के गुरू पूज्य श्री मल्ला जी म० का स्वर्गवास सं० १८२४ वैशाख वदी ५ रविवार कौ कुताना-शहर में हुआ था।

(७२) आचार्य श्री पूज्य लूणकरण जी महाराज—आपका जन्म शेखावाटी सिंघाणा शहर अग्रवाल वंश हुड़का में हुआ था। आपने अपनी माता की आज्ञा से सं० १८३५ मंगसिर वदी १० को झुंझणु शहर में जाकर पूज्य श्री श्योरामदास जी म० के पास दीक्षा ली। आपका स्वर्गवास कांधला शहर में हुआ था। आपके विषय में आगरे वाले पूज्य श्री रतनचन्द जी म० ने एक छन्द बनाया था वह इस प्रकार है।

दोहा—तास शिष्य गुणागरा, आज्ञा कारक जाण ।
लूण करण जी साधु है, सुधी स्वजन मतिमान ॥१॥

छन्द गुरु आज्ञ के धारी, पाच सुमिति के विचारी विषय दण्ड जीत के मोक्ष मार्ग को ध्याये है । करुणा के विहारी, तीन गुप्ती के कारी, छोड के ससार को, सयम लव लाये है । ज्ञान के विथारी, जिन मार्ग के उजारी, चतु संघ नायक, जास गुण गाये है । गुण ज्ञान के भण्डारी शुद्धि बुद्धि के विचारी, श्री पूज्य जी की पद्वी, शोभा घणं पाये है ॥१॥

(७४) पूज्य पाद तपस्वी श्री रामसुखदास जी महाराज—आपका जन्म सिघाणा शहर अग्रवाल वश कुकरी वालो मे हुआ था ।

(७५) पूज्य तपस्वी श्री ख्यालीराम जी महाराज—आपका जन्म सिघाणा शहर शकडाल कुल प्रजापत गगाराम जी के घर विक्रम स० १८६६ माता जैतश्री जी की पवित्र कुक्षी से हुआ था । विक्रम स० १८६२ चैत्र शुदी मे भज्भर नगर मे दीक्षा ली थी । आपने सो से अधिक अठाई करी और व्रत बेले तेले चोले की भी बहुत तपस्या करी आपने ३२ वर्ष तक सयम का पालन किया, कसबा छपरोली में विक्रम सं० १९२४ आसोज शुदी पचमी बुधवार को सथारा ग्रहण कर आसोज शुदी ७ शुक्रवार को स्वर्गवास हुआ । आपके ज्येष्ठ शिष्य श्री नैनसुख दास जी म० थे जिनका ...

ायु में ही नारनौल में स्वर्गवास हो गया था ।

। नोट—छपरोली के श्रावक रामानन्द जी के पुत्र भग-ींनदास जी ने उस समय एक ढाल बनाई थी वह भी वेथारे पाठकों के लिये यहां लिख देता हूँ ।

म **पूज्य तपस्वी श्री ख्यालीराम जी म० की सज्झाय ।**

दोहा—प्रथम नमों अरिहन्त को, सिद्ध आचार्य गुण गाय । उपाध्याय सर्व साधु के, चरण नमों चित लाय ॥१॥ ऋषभादिक सहु जिन नमुं, गोतमादि सहु सन्त । श्रुत देवी को बन्द कर, मुनि का गुण गावन्त ॥२॥ नगर नाम माता पिता, गुरु नाम तप भेद । चतुर सुनो चित चावसुं, मिटसी चिन्ता खेद ॥३॥ तपस्वी ख्यालीराम, गुण गाऊं स्थिर तन मन । छपरौली का श्रावक भणें, सुनो भविक एक मन ॥४॥

तर्ज लावनी—मैं वन्दूं सत गुरु पाय, नरण चित लाऊं धन्य धन्य श्री ख्यालीराम तपस्या गाऊं ॥टेक॥ जैत श्री मात उर जन्म लियो आई, बड़भागी गंगाराम पिता सुखदाई । अठारासो उणहत्तर साल हुआ अवतारी, सब बोलें जय जय कार, कुटुम्ब सुखकारी । शिकडाल कुल में हुए वड़े धर्मरागी, थारे हृदय अन्दर ज्योति ज्ञान की जागी । जिस विध दीक्षा लई ते सर्व सुनाऊं ॥ध०१॥ श्री पूज्य मनोहरदास जी महा-राज, गुरु वड़े भारी, जिनके शिष्य हुए भागचन्द अधिकारी । तिनके शिष्य सीताराम सर्वथा त्यागी, श्योरामदास जी चोंपाटी वड़ भागी । जिनके शिष्य पंडित लूणकरण वखानो,

उनके शिष्य रामसुखदास, तपस्वी जाणो । जिनके शिष्य ख्यालीराम दर्श चित चाऊँ ॥ध० २॥ अठारासो बाणवें साल, चैत सुदी माही, झज्झर नगर मझार जोगवृति पाई। हय गय रथ और अधिक पालकी आई । घणा बाजा बाजे, विविध निशान घुराई । धन्य तपस्वी रामसुखदास, पास वृत लीनी, धन्य धन्य तुमको बार बार, बुद्धि बडी चीनी तपस्या विधि करणी करे, शरल चित भाऊ ॥ध० ३॥ तीरे तीस के किये दो थोकडे भारी, एक बडौत बीच मे- मास खमण तपधारी । एक किया खेतडी बीच-मास अन्न त्यागा शुभ दिल्ली शहर के बीच, बीस व्रत लागा । चोबीस व्रत विनौली मे किये एक बारो । सोलह लुहारा मे किये अभि-ग्रह धारो । सूत्र अर्थ मुख पाठ भेद कहा तक पाऊ ॥ध०४॥ चौमासा खेतडी अठारासो अठाणवे किया, एक मास तपस्या करी, प्रेम रस पिया । साल निनाणवे दिल्ली शहर चौमासा बीस व्रत एक वार बचन मुख भाषा । ताही बीच मे किया एकान्तरे बारा । बीजे दिन कीना व्रत, न लीना आहारा । क्षमा ढाल खडग कर्म दूर ताऊँ ॥ ध० ५॥ पाच सात नो किया कहा तक गाऊ, दस ग्यारह बहुते करे, सर्व बतलाऊ । तेरह चौदह पदरह किये कई बारो, एक बार थोकडा सतरा दिन धारो । करी अठाई एक सो पचास जाणो, एक चौमासे बाइस लागा खाणो । तप करी शोषी देह भजा प्रभु नामो ॥ धन्य० ६ ॥ किया विगई का त्याग कई चौमासा,

इकीस वर्ष तक किया एकान्तर बासा । बीस वर्ष लग एक वस्त्र तन राख्या । शीत परिसह सहा प्रेम रस चाख्या । तपकी तेग गही कर माहीं मोटा, क्षमा ढाल कर लई अगाड़ी ओटा । शील रथ पर चढ़े मुक्ति पद पाऊं ।। ध० ७ ।। वडा शिष्य हुआ नैनसुख ब्रह्मचारी- बीजे चेले का नाम मंगल कारी । हीरालाल बड़ौत बीच बृत पाई, श्री धनी दास गुरु करें बड़ी अधिकाई । शहर सिघाणें जन्म हुआ मुनि बाला, वड़े रतनचन्द टौला में पंडित रसाला । नैनसुख ऋषि संथारा करी जाऊं ।। ध० ८ ।। जप तप करणी बतीस वर्षां ताईं, अन्त समय संथारा की मन आई । आश्विन शुदी शुभ पंचमी भला बुधवारो । छ घड़ी निशा गई तजा तीन आहारो । पंदरह पहर का संथारा सीझा सुखकारी, सवा पहर पहले तजे चार आहारी । देवलोक में गए सागर पल आयु ।। ध० ९ ।। म्यान दाव छपरोली कसवा गाया, उनीसो चोबीस साल चौमासा ठाया । आश्विन शुदी सातम तजी मुनीश्वर काया । शुक्रवार तब दोय घड़ी दिन पाया । शनिवार प्रभात विमान सजाया । डाले शाल दुशाले जय जय कार बुलाया । ताम्बा चान्दी दोनों मिलकर वर्षाऊं ।। ध० १० ।। आसपास के श्रावक चलकर आये, मुनि दर्शन कर चरनें शीश नमाये । चंदन घृत बहुत लाय दग्ध करी काया, भगवान दास छपरोली ये गुण गाया । तपस्वी को धनकार दें सहु नर नारी, थारा

नाम लिया सु कर्म जाल अघटारी। दास कहे भगवान प में आऊ ॥ ध० ११ ॥

कलश—टोला मनोहर दास का, बडा तप किया भारी। धन्य धन्य ख्याली राम, जिन्हो के गुण उचारी। पडित धनीराम मुनि सग रहे पासे, पढे सुने सुख होय, नमें भगवान दासे ॥

नोट—श्रावक भगवानदास तपस्वी जी के साथ रहा करता था और ग्रन्थ आदि भी लिखा करता था।

(७६) जगत्प्रसिद्ध आचार्य पूज्य श्री मगलसेन जी महाराज—आपका जन्म प्रजापत कुल मे हुआ था, आप शेखावाटी "परसरामपुर ग्राम राजस्थान के रहने वाले थे आपका जन्म विक्रम स० १९०२ मे हुआ था आपके पिता का नाम वख्शीराम और माता का नाम "रामाबाई" था। स० १९१९ मे आप वैरागी बने थे और १९२१ कार्तिक बदी सातम को काधला मे दीक्षा ली। आपके दो शिष्य हुए प्रथम ज्येष्ठ शिष्य वयोवृद्ध सयमी आचार्य गुरुदेव पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज, द्वितीय शिष्य परम आदरणीय मृदुभाषी आचार्य पूज्य श्री मोतीराम जी महाराज। आपके दो पोते चेले हुए, ज्येष्ठ आचार्य पदालंकृत पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी म० ज्योतिष एवं जैन आगमों के धुरन्धर विद्वान परम आदरणीय गुरुदेव पूज्यनीय श्री ज्ञानचन्द जी महाराज। आपके तीन पडोते चेले हुए—कवि सम्राट उपाध्याय पदालं-

कृत महामुनि राज अमरचन्द जी म० मुनि राज खुशहालचन्द जी (लेखक) अखीलेश श्री अमोलकचंद जी । विक्रम सं० १९७७ द्वितीय श्रावण बदी एकादशी मंगलवार को दिन के पोने ग्यारह बजे बडौत में स्वर्गवासी बने। दादरी में आकर सं० १९७८ में पूज्य श्री पृथ्वीचन्द जी म० स्वामी श्री ज्ञानचन्द्र जी म० ने आपके जीवन के विषय में एक ढाल बनाई थी वह भी मैं प्यारे पाठकों के लिए यहां लिख देता हूं ।

आचार्य पूज्य श्री मंगलसेन जी महाराज की ढाल

दोहा—श्री अरिहन्त अनन्त गुण, सकल जीव सुखदाय । आचार्य उपाध्याय थुन, बन्दू सब मुनिराय ।।१।। गणधर गोतम स्वामी का, धरता हूं नित्य ध्यान । मन बच काया योग से, भजन पूर पंचान ।।२।। श्री गुरु चरण सरोज को, बन्दत हूं निश दीस । वर दे वरदा स्वामिनी, कविजन नमावें शीश ।।३।। श्री पूज्य मंगलसेन का, वरनु गुण चित लाय । कृपा जो मुझ पर कीजिए, आशा पूर्ण थाय ।।४।।

तर्ज लावनी—सम्वत् उनीसो दो का वर्ष विशाला, परशराम पुर में जन्म हुआ, मुनि वाला । तुम पिता बख्शीराम महा गुण वाला, रामा बाई तुम मात महा गुण पाला । जयपुर राज्य देश बागड़ बतलाऊं ।। धन्य धन्य श्री पूज्य मंगलसेन मुनि गुण गाऊं ।।१।। सम्वत उनीस में आप बने वैरागी, संजम लेने की इच्छा मन में जागी । टोला मनोहर-

दास तणा बड भागी, तपस्वी ख्यालीराम महासौभागी। गुरु की करके सेव जन्म फल पाऊ ।।ध० २।। सम्वत् उनीसो साल इकीस माही, विचरत आये शहर कांधला माही। धर्मरागी श्रावक साधु तणा सुखदाई। बहु आग्रह कर चौमास लिया मनवाई। पडित धनीराम जी जिन के सग बतलाऊ ।।ध० ३।। इस ही चौमासे की कहु ये बाता, यों करता आया कातिक मास सुहाता। तिथि बदी सप्तमी योग शुभकर भाता। तब श्रावक मिलकर दीक्षा महोत्सव करवाना। बडे ठाठ वाट मे शुभ पच महाव्रत पाऊ ।। ध० ४।। साल चौबीस मे तपस्वी जी सुरपद पाया, बहु तपस्या कर के कर्मों का बाग जलाया। फिर सिंह वत् विचर कर आपने धर्म दिपाया। तुम तीन को धार के चार को दूर-हटाया। तुम पाच को लेकर पाच को बस में लाऊ ।। ध० ५।। फिर पूज्य रघुनाथ जी शिष्य आपने कीना, साल उन-तालीस सजम जिनको दीना। दूजा शिष्य श्री मोतीरामजी कीना, इकतालीस की साल योग्य वृत लीना। दोनों शिष्य आपके पडित राज सुनाऊ ।।ध० ६।। दोनो शिष्य आपके बाल ब्रह्मचारी है। बादी मद भंजन रंजन नर नारी है। पोते चेले तुम दो आज्ञा कारी है, पृथ्वीचन्द ज्ञानचन्द्र गुणधारी है। मन वच काया कर तुम चरनो मे ध्यान लगाऊ ।। ध० ७।। सम्वत् उनीसो साल छयन्तर आया, है गाम गगेरू सब के मन को भाया। जहां अमर चन्द का दीक्षा ठाठ रचाया।

जहां चारों दिश का श्रावक चलकर आया । सब देशों में है प्रसिद्ध कहां तक गाऊं ॥ध० ८॥ उस समय थी देह में खेद आपके जारी, पांशु में था दर्द और तप कारी । कान्धले के श्रावकों ने मिलकर अर्जी डारी । कांधले चलने की हुई मनसा थारी । तब आये कान्धला संग में सब मुनि राऊ ॥ध०९॥ वहां था डाक्टर मेहरचन्द जी बाबू, बहुता किया इलाज चला नहीं काबू । टूटी आयु को सकता नहीं कोई थाँबू । सब ही हैं इलाज जो होता आयु लाम्बू । फिर हुकम महाराज के, आलोयणा पाठ सुनाऊं ॥ध०१०॥ फिर वहाँ श्रावक बड़ौत के चलकर आये, कर नमस्कार चरणों शीश नमाये । बहुत आग्रह कर चौमास की अर्ज कराए । महाराज दयालु कर करुणा हुक्म सुनाए । सब हर्षित होकर जय जय कार कराऊं ॥ध०११॥ कांधला से अल्लम और अल्लम से सूप पधारे, सूप से चलकर आए बड़ौत मंझारे । दर्शन कर हर्षित हुए श्रावक सारे । आषाढ़ वदी थी पंचमी आदित्य वारे । अब चौमासे का कथकर हाल सुनाऊं ॥ध० १२॥ मंद होगई थी आपकी जठरागन, सब औषधी का किया आपने त्यागन । नित्य प्रति लगे अलोयना पाठ सुनावन । यों करता दूजा आ गया सावन । मैं हाथ जोड़ चरणों शीश नमाऊं ॥ध० १३॥ वदी एकादशी और दिन मंगलवारा, चारों आहार का प्रत्याख्यान उचारा । अलोय नीन्द कर कीना पूज्य संथारा, तीन योग से श्री जिन शरणा

धारा। पोने ग्यारह बजे तुम कीनी पूर्ण आयु ॥ ध० १४ ॥ जब चारो सघ मे अधिक उदासी छाई, मोह कर्म बस नयनो ने नीर बहाई। फिर धीरज धर कर करी विमान सजाई। सुलतान सिह आदि मिले सब भाई। कहे सुलतान सिह दिल्ली से सामान मगाऊ ध० ॥१५॥ जब दिल्ली से सामान सब आया, कारीगर मिलकर विमान अधिक सजाया। रेशमी वस्त्र और जरी बादला लाया। कलशी आदि से बहुत ही शोभा पाया। नयन न पावे सन्तोष कहा तक गाऊ ॥ध०१६॥ गाम गाम में दस्ती खत भिजवाए, चारों दिश के श्रावक चलकर आए। और मडी के श्रावको ने ठाठ रचाया, गाम रठोडा से बाजा भी मगवाया। मुनशी जोरावर बनशीलाल अगाऊ ॥ध०१७॥ थालों मे धूप और बाजे का शब्द रसीला, चदन के ऊपर चांदी का वर्क रंगीला। जरी का दुशाला भी अधिक सजीला। वह शहर मे आकर महाराज के ऊपर मेला। सताइस दुशालो का सारा जोड़ मिलाऊ ॥ ध० १८ ॥ बुधवार को ग्यारह बजे विमान उठाया, नर नारी मिलकर जय जय कार बुलाया। करी बखेर ज्यो अम्बर से घन वर्षाया। सोना चांदी और ताम्बा माह मिलाया। दोय शहस्र के अनुमान से बात बताऊ ॥ ध० १९ ॥ अष्टादस थे मनुष्य परमाना, हिन्दू मुसलमान सब ही मिल कर माना। फिर कर बाजार से पहुंचे मध्य मशाना। घृत चंदन कर्पूर से तन को दग्ध

कराना । ये सब ही ठाठ तुम पुन्य के संग बतलाऊं ।। ध० २०।। श्रावण शुदी दसमी मंगल वारा, तपस्वी पूर्णचन्द जी ने छोड़ा चार आहारा । छ पहर का आया कुल संथारा, आयु पूरी कर तपस्वी जी स्वर्ग सिधारा । पड़े बारह दुशाले और जय जय कार बुलाऊं ।। ध० २१।। सम्वत् उनीसो साल अठन्तर मांही, जमना पार से आये दादरी मांही । चैत्र सुदी नोमी को तुम महिमा गाई, तुमरे गुण हैं बहुत कहूं कहां तांई । कहे पृथ्वी ज्ञानचन्द्र तुम चरनों में चित लाऊं ।। ध० २२ ।।

(७७) प्रातः स्मरणी आचार्य गुरुदेव पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज—आप ग्राम डाबला के रहने वाले स्वामी वंशीय विप्र बलदेवदास के सुपुत्र थे आपका सं० १६२४ मंगसिर वदी १० शुक्रवार को माता केसरादेवी की पवित्र कुक्षी से जन्म हुआ था । बालावस्था में ही आपके माता-पिता स्वर्गसिधार गये थे अतः आप (आपकी बहन गोरांदेवी जी) अपने मामा मंगल चन्द के यहां सिघाणा रहने लगे थे । आपके एक बड़े भारी पुन्य के उदय से उस समय विश्व विख्यात आचार्य पूज्य गुरु श्री मंगलसेनजी महाराज का सिघाणे पधारना हो गया ।

दोहा—जैन धर्म के पूज्यवर, शक्ति परम महान ।
पूज्य गुरु मंगलसेन जी, विराजे सिघाणा आन ।।१।।
नर-नारी सब शहर के, बोले परस्पर ऐन ।
पूज्य गुरु मंगलसेन के, सुनेंगे मीठे बैन ।।२।।

जहा शहर की जनता गुरु के उपदेश सुनने को आया करती आप भी उनके साथ उपदेश सुनने के लिये आने लगे।

आपने गुरु का उपदेश क्या सुना आपको एकदम वैराग हो गया, मामा मगलचन्दजी की आज्ञा लेकर अब आप पूज्य गुरु मगलसेनजी म० की शरण मे आ गये। विक्रम स० १९३४ का चौमासा महेन्द्रगढ हुआ। साथ ही तपस्वी पूज्यपाद स्वामी श्री लेखराज जी महाराज का भी चौमासा वही पर था तपस्वी के प्रधान शिष्य श्री सुखरामजी भी वैरागी बने थे, आपके साथ ही उन्होने भी विद्याध्ययन किया, ग्राम-नगरो मे भ्रमण करते हुए लुहारी ग्राम (मेरठ) पधारे, वहा के सघ ने गुरुदेवजी से प्रार्थना की कि हे गुरु महाराज इनकी दीक्षा हमारे क्षेत्र मे ही होनी चाहिये।

दोहा—श्री सघ लुहारी का, सकल मिला तिनवार।
दीक्षा हो यहां पर गुरु, मुख से रहे उचार ॥१॥
अर्जी मान श्री सघ की, हुकम दिया फरमाय।
फागुण कृष्णा दसमी, दीक्षा दी रचवाय ॥२॥

विक्रम स० १९३६ फागुण वदी १० रविवार को आपकी दीक्षा हुई और आपके साथ ही धुरन्धर विद्वान महान् प्रभाविक प० स्वामी श्री सुखरामजी महाराज जी की भी दीक्षा हुई। दीक्षा महोच्छव पर सम्प्रदाय के प्रसिद्ध प्रसिद्ध सत-सतिया सभी आये थे।

तपस्वी लेखराज जी महा मुनि, गोरधन दास जी दीक्षा

में आये हैं। सती राजो जी और मोहनिया जी, भोजराज मुनि सुख पाये हैं। खुशी के वाजे वज रहे चहुं दिश, घर-घर जय जय कारे हैं॥ लुहारी ग्राम के श्रावक जन, मुख मे जय जयकार उचारे हैं। देश-देश के यात्री आये, जहां दीक्षा मंडप रचा भारी है॥ पूज्य गुरु से दीक्षा ली आपने, हृदय हर्ष अपारी है। मुख पर मुखपत्ती शोभती, चद्दर चोल पटे की छटा निराली है। वगल में ओघा हाथ में झोली, हृदय में ज्ञान की लाली है।

दोहा—उसी समय दीक्षा लई, स्वामी श्री सुखराम।
गुरु लेखराज महाराज ने, सिद्ध किये सब काम॥१॥

आप अपने गुरुदेव के साथ विचरते हुए सं० १९४७ में आगरा लोहा मंडी पधारे गुरु जी का चौमासा मंडी में हुआ और गुरु की आज्ञा से आपने शहर में चौमासा किया। सं० १९५३ का चौमासा सिंघाणा किया इस चौमासे में कुंजा का परिवार को जैन धर्म में दीक्षित किया लाला चुन्नीलाल वृजलाल भोलाराम मंगलचंद कन्हीराम को जैनी वनाये। सं० १९६६ माघ शुक्ला द्वितिया को अपने प्रिय शिष्य जैन आगमों के धुरन्धर विद्वान ज्योतिषाचार्य पंडित स्वामी श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज को चरखी दादरी चौधरी मोतीलाल हीरालाल के दीवान खाने में दीखा दी। सं० १९७१ का लिसाढ़ ग्राम में चौमासा कर माघ मास में श्यामडी ग्राम पधारे इस क्षेत्र पर आपका

वडा उपकार है। यहा की जनता ने आपसे जैन धर्म की शिक्षा ली थी, लाला बनवारीलालजी मुनशीराम मक्खनलाल श्रीचन्द मानसिह सुगनचन्द्र शीशराम चिरजीलाल दरवारीलाल प्रभुदयाल रामानन्द देवकाराम फतेचन्द रामसरूप खुशीराम टेकचद सीताराम फुल्लामल आदि वैश्य वर्ग व जाट जमीदार ब्राह्मण सुनार नाई आदि लोग जैनी हो गये। अब भी श्यामडी के लाला रामसरुप टोडरमल मानुराम शेरसिह पृथीलाल मगलसेन नेमिचन्द खुशीराम, लाला गोरधनदास पन्नालाल बलदेवामल जुगमदरदास पालीराम मामनचन्द रामनिवास रोशनलाल मनोहरलाल, दरवारीलाल कृपाराम जयकुमार रामकुमार, महावीरप्रसाद रघवीरसिंह घनश्यामदास, सीताराम रतनलाल, हरदेवसहाय मनोहरलाल माधुराम किशोरीलाल महासिह प्यारेलाल रामचद रामधन मागेराम, छोटुराम ताराचन्द रतनलाल इन्द्रचन्द रघवीर गुरुभगत भुरामल इत्यादि श्रावक गण, तथा ज्ञानो हरदेई और ज्ञानो की माताजी चौधरी ओमप्रकाश आदि धर्म ध्यानकर अपने जीवन को सफल बना रहे है।

इकहत्तर के माघ मास मे प्यारो, गुरु श्यामडी ग्राम पधारे है।
धर्म धजा फराई वहा पर, जैन धर्म के बजे नक्कारे है।

काई की तरह अज्ञान अन्धेरा हटा, जनता के हृदय में ज्ञान का प्रकाश हुआ। ब्राह्मण बनिया जाट सुनारो ने,

जैन धर्म को स्वीकार किया ।

सं० १६७२ में श्यामडी क्षेत्र में परम आदरणीय व्याख्यानी पंडित महामना स्वामी श्री मुखराम जी महाराज महान सेवा भावी विद्वान श्री लक्ष्मीचन्दजी म० का चौमासा हुआ और भी इनके कई चौमासे श्यामडी हुए आपके लगाये हुए बाग को इन्होंने हरा-भरा वनाया इनके सदोपदेश से श्यामडी में स्थानक भी वन गया ।

सं० १६७७ दूसरे श्रावण वदी ११ मंगलवार को आपके गुरुदेव आचार्य पूज्य श्री मंगलसेनजी म० का वडौत में स्वर्गवास हुआ जिससे आपके हृदय को बड़ी भारी ठेस पहुंची ।

दोहा—सम्वत् उनीसो आ गया, साल सतत्तर जान । बड़ौत श्रावण दूसरा बदी, एकादशी सुमंगल मान ॥१॥ पूज्य श्री मंगलसेनजी, कर संथारा तिन वार। चारों संघ को खमाकर, पहुंचे स्वर्ग मंझार ॥२॥

गुरु वियोग का सज्जन प्यारो, गुरु को दुख हुआ अति भारी है । ज्ञान वल से मन को समझा के, चिन्ता दूर निवारी है ।

सं० १६८० माघ शुक्ला पंचमी आदित्यवार को सिंघाणा शहर कुंजाकाओं की धर्मशाला में आपके पोते शिष्य मुनि खुशहालचन्द्रजी (लेखक) को दीक्षा दी और सं० १६८४ का भिवानी चौमासा करके हांसी जीन्द सफीदम

पानीपत करनाल थणेसर होकर सं० १९८५ का अम्बाला छावनी चौमासा किया ये सब काम अम्बाले वाले बाबूराम के भ्राता सोहनलाल रग वाले ने ठाठ लगवाये।

दोहा—पूज्य श्री रघुनाथजी, ज्ञानचन्द्र मुनिराज।
चले प्रान्त पजाब मे, धर्म दीपावन काज ॥१॥

स० १९८६ का चौमासा रोपड और १९८७ का फगवाडा १९८८ का कशुर शहर जगन्नाथ प्यारेलाल बाबूराम की नई हवेली में किया। स० १९८९ का चौमासा उडमड अहिम्रापुर किया। खरड (अम्बाला) मे आपके दर्शन करने के लिये योगीराज महामुनी श्री कुन्दनलालजी महाराज पधारे थे। फगवाडा स० १९८७ चैत्र मास मे लुध्याने वाले बाबा श्री जयरामदासजी महाराज आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज स्थानक मे आकर आपके दर्शन किये।

दर्शन व वार्तालाप करके अतीव प्रसन्न हुए। स० १९९० का चौमासा जगरावा किया, यहा विराजित वृद्ध सयमी गुणज्ञान क्षमा के भण्डारी महामुनिराज श्री गोबिन्दरामजी म० शास्त्री विद्वान पंडितराज स्वामी श्री छोटेलालजी महाराज के साथ बडा प्रेम रहा ये मुनिराज आपके पूर्व परचित थे। पंजाब से दादरी पधारे यहा पर तार मिलाकि महासती श्री गोरादेवी जी म० का चैत्र वदी ५ को सिघाणा मे स्वर्गवास हो गया अत. आप सिघाणा पधारे। स० २००० का चौमासा खडेला किया सेठ किशनलाल भौरेलाल चन्द्रचंद

जयचन्द, सेठ हर्षचंद इन्द्रचंद भोंरेलाल लाभचंद महावीर प्रसाद हंसराज, मूलचंद जमनालाल भोंरेलाल पुनमचंद लोढा चोथमल मक्खनलाल, सुवालाल हीरालाल लाभचंद जयचन्द सेठ तनसुखराय माणकचंद धन्नालाल जयचन्द नरसिंह, भोंरेलाल ताराचंद वनसीलाल आदि भाई वाइयों ने खूब धर्मध्यानके ठाठ लगाये बाई भाइयोंने तपस्या भी खूब करी।

विक्रम सं० २००२ के कार्तिक शुदी त्रियोदशी को चारों संघ द्वारा आचार्यपद से भूपित हुए आपको आचार्य पद की चद्दर उढ़ाई गई उसी समय स्थानक पर कलश चढ़ाया गया, छोटा कलश ईशराने के लाला वनवारीलाल माई रामकी तरफ से चढ़ा आचार्य पद महोच्छब कलशारोहरण उत्सव पर इसराने के और वहुत से क्षेत्रों के भाई वहनें आये थे वहां पर घोर तपश्चर्या करने वाली महासती श्री पद्मश्रीजी, श्री हितश्रीजी, श्री फूलश्रीजी, आनन्दश्रीजी का भी चौमासा था।

दोहा—दोकी साल कार्तिक शुदी, तिथित्रियोदशी जान।
चारों संघ ने मिलकर आपको, कीना पद प्रदान।

चारों संघ ने सिलकर मित्रो, आचार्यपद प्रदान किया।
जय २ पूज्य रघुनाथ गुरु की, संघ ने मिल जयकार किया॥

बसई ग्राम में दादरी संघ की अति आग्रह भरी प्रार्थना को स्वीकार करके सं० २००६ बैशाख शुदी एकम शुक्रवार को स्थानापति होने के लिए दादरी पधारे। यहाँ पर सं०

२००६ आषाढ सुदी अष्टमी सोमवार को शाम के छ बजे प० स्वामी श्री ज्ञानचन्द जी महाराज का स्वर्गवास हो गया दूसरे दिन मंगलवार को शाम के पाँच बजे चौधरी हीरालाल बाबूराम की छतरी के पास ही दाह संस्कार हुआ। और सं० २०१७ पोह सुदी १३ शुक्रवार को आधी रात के समय सुख समाधी सहित संथारा कर आप ६३ वर्ष एक मास १८ दिन की आयु पुरी कर स्वर्गवासी बने। पोह सुदी १५ आदित्यवार को दो बजे विमान उठाया, विमान के साथ हजारों की संख्या में जनता थी। दाह संस्कार चौधरी जी की छतरी के पास हुआ।

(७८) परम आदरणीय पूज्य पाद गुरुदेव प० स्वामी श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज—आपका जन्म सडोला ग्राम महेन्द्रगढ रोड पर चौधरी सूबचन्द के घर हुआ विक्रम सं० १९५१ में हुआ था। आप सं० १९५७ में वैरागी बने आचार्य श्री मोतीरामजी म० महान् आचार्य श्री पृथ्वीचन्दजी म० से ज्ञानध्यान धर्म शिक्षा वर्णमाला आदि का ज्ञान प्राप्त किया। पश्चात् उद्भट विद्वान आचार्य गुरुदेव पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज ने आपको बड़े प्रेम से पढाया और आपको चरखी दादरी मे सं० १९६६ माघ शुक्ला २ को चौधरी मोतीलाल हीरालाल बाबूराम के दिवानखाने में दीक्षा दी आप आचार्य पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज के शिष्य बने। आप जैनागम एवं ज्योतिषशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान

थे, जैसा आपका नाम "ज्ञानचन्द्र" था वैसे आप ज्ञान के भी भण्डार थे। ग्राम नगरों में धर्म प्रचार करते हुए विक्रम सं० २००६ वैशाख शुदी १ शुक्रवार को दादरी पधारे, शरीर में असाता वेदनी का जोर हो गया और आषाढ शुदी अष्टमी सोमवार शामके छ बजे अपने चारों संघको विलखता छोड़कर समाधी सहित काल करके स्वर्गवासी हुए। नोमी मँगलवार को चौधरी बसन्तराय चन्द्रसेन की छतरी के निकट दाह सँस्कार हुआ। दादरी के चौधरी हीरालाल वावूराम राजकुमार हंसराज जगदीश प्रसाद, चौधरी मुरारी लाल फूलचन्द ओमप्रकाश, चौ० ज्वाहरसिंह, कँवरसेन, कृपालसिंह खेमचन्द जयसिंह सुगनचंद झांगूमल मांगेराम जगदीशराय चनारिया, मास्टर वख्तावरसिंह राजेन्द्रसिंह, मुनशी हीरालाल चिरँजीलाल, मंगलसिंह जलोदिया, मुनशी मंगलसिंह, गोपीराम नन्दकिशोर वावूराम जादोराम मदनलाल अमरनाथ भांडिया, दुर्गाप्रदास, डाक्टर साहव धर्मवीर जैन, श्रीमान् लाला अभयसिंहजी के सुपुत्र मास्टर साहव एक्स प्रेजीडैण्ट म्युनिसिपल कमेटी लाला उद्दमसिंह जी कवूलसिंह हरीदास, वकील वालकृष्णजी वकील वख्शीरामजी फूलचन्द महावीर प्रसाद किदारनाथ, स्टेशन मास्टर वावू रामचन्द्र जी हरीरास मजिस्ट्रेट वावू सुगनचन्द लाला गुरसहायमलजी मास्टर वनारसीदास मास्टर अनन्त प्रकाशजी लालचन्द श्रीचन्दआदि समग्र जैन विरादरी, राम

नाम के भगत रामप्रसाद जी मुन्नीलाल शिवलाल बुधराम महावीरप्रसाद वर्मा, महेन्द्रगढ वाले विशम्भरदास छजूराम किशोरीलाल सागरचन्द नागचंद, सिंघाना वाले कुंजा का गोंगराज, बाबू टेकचंद चौधरी कँवलसिहजी, चौधरी दीदारसिहजी आदि धर्म प्रेमी सज्जनो ने तन-मन-धन एव हर प्रकार से सेवा की। यहा के बाई भाइयो की सेवा हमेशा याद रहने वाली है।

(७९) मुनि श्री खुशहालचन्दजी (लेखक) सिलावर ग्रामके रहने वाले (यह ग्राम श्यामली सेपाच मील उत्तर की तर्फ है) पिता भगतराम माता बावली वाली सीसोदेवी। भुवा हरदेई के पुत्र बल्लुमल रतीराम केवलराम भोलुराम आदि। बारह वर्ष की आयु मे स० १९७७ दूसर श्रावण शुदी ३ मगलवार को १० वजे गुरु चरणो का शरण लिया और स० १९८० माघ शुक्ला पचमी आदित्यवार को सिघाणा मे दीक्षाली। प० स्वामी श्री ज्ञान चन्द्र जी महाराज के शिष्य बने।

(७०) मुनि श्री आनन्द ऋषिजी म० ग्राम श्यामडी के वासी अग्रवाल मित्तलगोत्री लाला शीशरामके पुत्र० माताका नाम लालीदेवी अलीपुरवाले लाला बनवारी लाल की बहन जन्म मगसिर शुदी तीज बुधवार स० २०१० वैशाख बदी सप्तमी शुक्रवार को वैरागी बने, सं० २०२१ फागुण बदी १० रविवार को ग्यारह वर्ष दो मास बाइस दिन की

आयु में राजलुगढ़ी के मैदान में दीक्षा ली। मुनि श्री खुश हाल चन्द्र जी के शिष्य बने। इनकी ज्येष्ठ बहन "मगनश्री जी" ने सं० २०२४ ज्येष्ठ शुदी १५ गुरवार को हथवाला ग्राम में दीक्षा ली इन्होंने दीक्षा लेने से पहले सं० २०२३ लुहारी ग्राम (मेरठ) में व्रत वेला तेला चोला और अठाई की तपस्या करी, सं० २०२४ में दीक्षा के बाद गंगरु (मुजफ्फर नगर) में भी ऐसे ही अठाई आदि की तपस्या करी, देहली गांधी नगर रबर पुरा नं० २ गली नं० ११ जैन धर्मशाला में अन्य तपस्या के साथ अठाई करी, यह सती श्री पद्मश्री जी हितश्रीजी की शिष्या है।

आचार्य पूज्य श्री मंगलसेनजी महाराज के द्वितीय शिष्य पं० आचार्य श्री मोतीरामजी म० थे इनका जन्म विक्रम स० १९२५ वैश्य वंश सिंघाणा में हुआ था इन्होंने अत्यन्त वैराग के साथ स०१९४१ वैशाख शुदी सत्यमी कुताण में दीक्षाली थी और स्वर्गवास स० १९९२ वैं महेन्द्रगढ़ में हुआ था इनके पट्टधर शिष्य महाप्रभाविक आचार्य श्री पृथ्वी चन्द्र जीम० इनका जन्म सं० १९४५ नारनौल में हुआ था दीक्षा सं० १९५७ फागुण की पूर्णमासी को महेन्द्रगढ़ में हुई थी सं० १९९३ में नारनौल में आचार्य पद मिला अब आप आगरा लोहा मण्डी के जैन स्थानक में विराजमान हैं। इनके दो शिष्य हैं—उपाध्याय पदालंकृत कविसम्राट पूज्य पाद श्री अमरचन्द्रजी

म० इनकी दीक्षा सं० १६७६ माघ शुदी १० गंगेरू ग्राम मे हुई थी, दूसरे शिष्य परम मेधा भावी ज्ञानी गुणी श्री ग्रमोलक चन्दजी म० ग्रापकी जन्मभूमि नारनौल दीक्षा भी स० १६८४ माघ शुदी पन्चमी को नारनौल मे ली।

ग्राचार्य पूज्य श्रीश्योरामदासजी म० के पाट पर पूज्य तपस्वी श्री देवकरण जी महाराज हुए ग्रापका जन्म सिघाणा शहर (शेखावटी ग्रग्रवाल वश) (डाकोतबोक) मे हुग्रा था ग्रापके पिता "मनसाराम ग्रौर माता रामकोर देवी था। ग्रापने बडे वैराग्य के साथ दीक्षा ली। ग्रापने बडी भारी घोर तपस्या करी, दादरी के कानुगो भाइयो को ग्रापने ही जैन धर्म मे लगाया था (पूज्य पाद श्री गुलाबचन्द जी महाराज ने तपस्वी श्री सेवगराम जी के पच ढालिया मे लिखा है कि "उग्र विहार करता थका, ग्राया दादरी माह हो। ग्ररस निरम ग्राहार भोगवे, तप सेती लव लाय हो ॥भ० ५॥ कानुगो समझा दिया, कीधा श्रावक सार हो। मार्ग ग्रधिक दीपाविया, सब जीवाने सुखदाय हो ॥ भ० ६७॥ दादरी मे इनका स्वर्गवास हुग्रा था इनकी छतरी (समाधी) दादरी में बनी हुई है। इनके दो शिष्य हुए श्री सेवगरामजी ग्रौर पूज्य श्री तुलसी रामजी म०। प्रात. स्मरणीय पूज्य घोर तपस्वी श्री सेवग रामजी म० ग्रापका जन्म विक्रम सं० १८२० भीवानी के पास पश्चिम मे बापोड़ ग्राम ग्रग्रवाल वश लाला चेतराम

ी के घर में हुआ था, आपकी माता का नाम सहजी बाई था। आप का विवाह हुआ व्यापार के लिए अपने पिता के साथ भिवानी में आकर बस गये। कुछ वर्षों के बाद घर-वाली गुजरगई। विक्रम सं० १८५३ और १८५१ का चौमासा तपस्वी श्रीदेवकरण जी म० का भिवानी हुआ उमरयाका के थानक में, तपस्वीजी के उपदेश को सुनकर तथा हांसी वाले बारह व्रतधारी घरवार का त्यागी मगनी राम की अधिक प्रेरणा से आपको वैराग्य हो गया, समायक सम्बर व्रत पोसा आदि धर्मध्यान की सब बातें सीख ली और खूब धर्म ध्यान करने लगे। जब माता-पिता से दीक्षा की आज्ञा मांगी तो उत्तर में कहा जब तक हम जीवित रहें तुम दीक्षा मत लेना घर वालों का कहा मानकर उनकी सेवा कर जीवन सफल बनाने लगे। जब माता-पिता का देहान्त हो गया तो आपने दादरी आकर पोह के महने में सं० १८६१ में देवकरण जी के पास दीक्षा ली। गुरु के साथ रहकर आपने बड़ी भारी तपस्या करी। आपके जीवन चरित्र का पंच ढालिया श्री गुलावचन्दजी म० ने बनाया जिसका कुछ अंश यहां लिखता हूँ। सम्वत् अठारा इकसठे, पोह महीना सुखकार हो। दादरी में दीक्षा लई, स्वीर्माजी पास आय हो। अधिका तप तिन आदर्या, ते कहस्यूं चित लाय हो। सम्वत् अठरा बासठे, आषाढ महीना जाणो हो, श्री तुलसीरामजी दीक्षा लई, आगे निसुणो

वखाण हो ।।

कुछ साल के बाद तपस्वी श्री देवकरणजी म० का दादरी मे स्वर्गवास हो गया अब आप दोनो गुरु भाई पूज्याचार्य श्री लूणकरणजी म० के पास आ गये । आपने व्रत बेला तेला अठाई आदि बहुत तपस्या करी स० १८८४ भाद्रा के महिने मे पन्दरादिन का व्रत किया, फिर बीस दिन का व्रत किया, चौमासा पूरा कर मगसिर मे विहार करके सिघाणा पधारे, एकान्तरे तपस्याकारी, बीच में बेले तेले चोले पचोले की तपस्या करी स० १८८५ की साल मे श्रावण शुदी तीज को इकतीस दिन का व्रत लिया और भाद्रा शुदी छठ को इकतीस दिन का पारना किया। स० १८८६ की साल में चालीस दिन का व्रत किया स० १८८७ मे ३० दिन का व्रत किया । स० १८८८ मे चोवीस दिन का व्रत किया स० १८८९ मे पैंतालीस दिन का व्रत किया १८९० मे सोलह दिन का व्रत किया स० १८९१ वे मे बतीस दिन का व्रत किया, सतरा दिन का व्रत किया । अन्त मे सँ० १८९८ वे साथारा करने का विचार हुआ तो पूज्य श्री तुलसीरामजी म० के कहने से दो महीने बाद माह वदी चौथ रविवार को चारो साध के मने करने पर भी साथारा कर ही दिया, फागुण शुदी १४ शुक्रवार को छ घड़ी दिन चढे ५५ पिचपन मे दिन आपका स्वर्गवास हुआ । चौधरी रामनाथजी केशोरामजी आदि

चारों खांपके श्रावकों ने मिलकर बड़ा भारी विमान सजाया बड़े ठाठ बाट के साथ मजल पहुँचाये दाह संस्कार हुआ।

पूज्य आचार्य श्री तुलसीरामजी म० आपने विक्रम सं० १८६२ आषाढ मास में दादरी में दीक्षा ली, आपकी रूप सम्पदा दर्शनीय थी आप वचनसिद्ध पुरुष थे। पैरों में वात (वाय) ब्याधी होने से आप अधिक नहीं विचर सके। आचार्य श्री लूणकरणजी म० के वाद आप आचार्य बने। सिंघाणा में आप स्थानापति हो गये और विक्रम सं० १९१८ भाद्वा शुदी छठ को स्वर्गवास हुआ। आपके बड़े शिष्य श्री गुलाबचन्दजी महाराज थे इनके शिष्य खेतडी निवासी प्रजापत कुलोत्पन्न तपस्वी पूर्णचन्दजी म० थे इनका स्वर्गवास विक्रम सं० १९७७ दूसरे श्रावण शुदी १० मंगलवार को बडौत में हुआ था। कवि सम्राट पूज्य श्री धनीदास जी म०—आप आचार्य पूज्य श्री तुलसीरामजी म० मान्यनीय शिष्य थे आपकी कविता म्यानदाव जमनापार खादर बांगर शेखावाटी मेवात राजस्थान में बड़े प्रेम के साथ गाई जाती है। आपका जन्म प्रजापत कुल सिंघाना में हुआ था और स्वर्गवास विक्रम सं० १९२७ दोघट में हुआ था। आपके शिष्य गोरधनदासजी डालूरामजी सोभारामजी भोजराजजी नन्दरामजी मगनीरामजी हीरालालजी तपस्वी श्री लेखराजजी आदि हुए। तपोनिधि एकान्तर तपस्या करने वाले श्री लेखराजजी म०—आप पूज्य कवि श्री धनीदास

जी महाराज के शिष्य थे आप अधिकतर पूज्य श्री मंगलसेनजी म० के साथ विचरा करते थे। आपके प्रिय शिष्य प्रान स्मरणीय पूज्यपाद प० श्री मुखरामजी महाराज थे इनकी दीक्षा तुहारी ग्राम (मेरठ) में विक्रम सं १९३९ फागुणबादी १० रविवार को हुई थी और साथ ही दीक्षा आचार्य पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की हुई थी, इनका अधिक विचरना श्यामडी खानपुर बुवाना इसराना पानीपत राजाखेडी कुताना भगवानपुर मे था। स्वर्गवास भगवानपुर कातिक शुदी ३ को स १९९४वे मे हुआ था। आप एक माने हुए विद्वान सन्त थे, आपके विद्वान शिष्य वयोवृद्धि प० श्री लक्ष्मीचन्दजी म० है। इनकी दीक्षा राजाखेडी सं० १९६९ वैशाखशुक्ला ८ बुधवार को हुई थी इनके शिष्य सेवाभावी गुरु भक्त श्री ऋषभचन्दजी है इनकी दीक्षा सं० १९९७ झिझाणा हुई थी यह अपने गुरु की तनमन से खूब सेवा कर अपना जीवन सफल बना रहे है।

आचार्य श्री श्योरामदास जी महाराज के लघुशिष्य—

पूज्य तपस्वीराज श्री हरजीमलजी महाराज—

आपका जन्म छपरोली के पास हलालपुर ग्राम में हुआ था, आपके पिता सहजराम माता भगवतीदेवी थी। आपके पिता और ताऊ सेढमलजी ने मनोहर सम्प्रदाय के श्री पुज्य मनमुख रामजी म० के पास दीक्षा ली थी। आपने देहली में विक्रमस० १९४० में आचार्य श्रीश्योरामदासजी म० के पास

दीक्षा ली, आपके ज्येष्ठ शिष्य लालजी मलजी और प्रसिद्ध शिष्य जैन जगत के चमकते सितारे पूज्य श्रीरतनचन्दजी म० थे और आपने सं० १८८८ में भरतपुर में माघ शुक्ला सप्तमी गुरुवार को संथारा किया और अष्टमी शुक्रवार को रात्रि के समय स्वर्गवासी हुए। उस समय आप सोलह ठाणेसे थे।

आचार्य पूज्यपाद जैन जगत के चमकते सितारे पूज्यश्री रतनचन्द जी महाराज—आपका जन्म संघाणा (खेतडी) के पास तातीजा ग्राम में विक्रम सं० १८५० भाद्वा वदी १४ को गुज्जर वंशोत्पन्न चौधरी गंगाराम के घर हुआ था आपकी माता सरुपादेवी थी, आप कई वर्ष तक वैरागी रहे विक्रम सं० १८६२ भाद्रशुक्ला ६ शुक्रवार को दीक्षा ली, देश देशान्तरों में विचर कर धर्म प्रचार किया सं० १९२१ वैशाख शुदी १२ बुधवार को संथार कर वैशाख शुक्ला १५ शनिवार को दिन के दो वजे स्वर्गवासी हुए। आपके ज्येष्ठ शिष्य लुहारा सरायके रहने वाले अग्रवाल (पठाण) पूज्यपाद स्वामी श्री कँवरसेनजी म० अमरचन्दजी, तपस्वी श्री विनयचन्दजी पूर्णचन्दजी आदि बाइस शिष्य थे श्री कँवरसेन जी महाराज के शिष्य श्रीश्यामसुखजी थे। इनके शिष्य पूज्यनीय शास्त्रार्थी महामुनि श्री ऋषि-राजजी म० हुए। इनके दो शिष्य हुए मनोहर भाषी पं० श्री प्यारेलालजी म० इनके शिष्य रामलालजी। श्री ऋषिराज जी म० के दूसरे शिष्य क्षमा के सागर महान् सेवा

भावी गणीराज श्री श्यामलालजी महाराज थे इनके शिष्य पोत्रशिष्य यत्र तत्र विचर रहे है।

तपस्वीराज श्री विनयचन्द जी म० के शिष्य धुरन्धर विद्वान महा प्रभाविक पूज्याचार्य श्री चतुर भुजजी महाराज— आपका जन्म राजपूत कुल मे जीवाराम के घर में हुआ था माता का नाम सरुपा देवी था। सात वर्ष की आयु में आपने गुरु जी की शरण ली, आपने विचर कर खूब धर्म प्रचार किया स० १९३३ भाद्रा शुदी ६ को छमच्छरी व्रत का पारना करते ही स्वर्गवासी हो गए। तपस्वी जी के दूसरे शिष्य चेतनराम जी थे। तपस्वी जी के तीसरे शिष्य पूज्य पाद श्री भरता जी म० थे, इनका जन्म विक्रम सं० १९१० वैशाख शुदी ८ और दीक्षा १९२४ मगसिरवदी १३ गुरु- वार को दोघट मे हुई और स्वर्गवास भी स० १९७३ आषाढ़ कृष्णा अष्टमी को दोघट मे हुआ। आपके तीन शिष्य हुए। महामना शरलस्वभावी श्री सुखानन्द जी म० इनकी दीक्षा स १९४५ मगसिर वदी ८ को हुई थी। दूसरे शिष्य सिद्धान्ताचार्य प० श्री लालचन्द जी म० इनकी दीक्षा सं० १९६३ फागुण वदी ५ रविवार को हुई थी और स्वर्ग- वास सं० २००४ बडौत मंडी मे हुआ था। तीसरे शिष्य तपस्वी श्री जस्सीराम जी महाराज थे इनका स्वर्गवास बडौत मंडी मे हुआ था। श्री लालचन्द जी म० के तीन शिष्य हुए। प० श्री विमल मुनिजी भजनलाल जी विनय मनि जी। इति शुभम।

आचार्य पूज्य श्री मनोहर दासजी महाराज की सम्प्रदाय की साध्वी (आर्या)ओं की नामावली

(१) श्री मया कुंवरी जी (२) श्री महाकुमरीजी (३) श्री हरीकुंवरीजी (४) श्री सुन्दर जी—आप का जन्म सिंघाणा में हुआ था (५) तपसण श्री रामकोर जी—आप का जन्म सिंघाणा शहर अग्रवाल फटकडी वालों में हुआ था, आपने विक्रम सं० १८८९ पोहशुदी १ रविवार को नारनौल में दीक्षाली थी आपने व्रत बेला तेला अठाई मास खमण आदि बहुत तपस्या करी सं० १९१८ में दादरी चौमासा किया, इस चौमासे में श्रावण शुक्ला पंचमी को एक महीना की तपस्या करी (भाद्वा शुदी पंचमी की रात्री को देवता दर्शन करने आया आप का सेवक बना) जिसका पारना भाद्वा शुदी ६ को हुआ। सती श्रीसुन्दरजी ने आगरे विराजित पूज्य श्री रतनचन्द जी म० को पत्र द्वारा सूचना दी कि तपसण रामकोर जी ने मासखमण तप कर रखा है, यह पत्र सं० १९१८ भाद्वा वदी १ बुधवार को लिखा था, जिसका उत्तर महाराज ने इस प्रकार दिया, उस पत्र पर मोहर २५ अगस्त सन् १८६१ की लगी हुई है पत्र का उत्र आगरा माणकचन्द पन्नालाल की कोठी के पते से मंगाया था। पत्र की नकल। स्वस्ती दादरी शुभस्थान आर्याजी श्रीसुन्दरजी रामकुंवरजी चन्दाजी अप्र समस्त योग्यात्र ~आगरासं रतनचन्द चतुरभुज की सुखसाता घणा मानसुं

वचनी अन्नानन्द तन्नानन्द वाछामि । समाचार एक बंचना चिठ्ठी तुम्हारी भाद्वा बदी १ बुधवार की लिखी हुई भाद्वावदी चौथ शनिवार को पहुची समाचार मालुम करा। रामकुवरजी ने मास क्षमण तप करा लिखा सो जाना। बहुत तपस्या करी, पारणे की सुखसाता का ब्योरा लिखना। रामकुवर जी ने म० १९५१ कार्तिक कृष्णा एकादशी को सिघाणा मे स्वर्गवास प्राप्त किया। आप की पोती चेली सोनाजी ने आपकी महिमा की ढाल बणाई थी वह भी प्यारे पाठको के लिए लिख देता हू।

तपसण श्री रामकोरजी की तपस्या

धन-धन तपसण रामकोरजी, चढते भावे सजम लीनो विविध प्रकारे तपस्या कीनी, आत्मा कारज सिद्ध कीनो ॥ टेक ॥ देशो माही देश शिरोमण बागडे देश, शहर सिघाणा मे जन्म लीनो। पुन्य योग शुभ सगत पाई, जिन धर्म से हिल कीनो ॥ ध० १॥ अरिहन्तदेव जगत मे मोटा, गुरु कचन कामनी त्यागी। जीव दया मे धर्म परुप्या, इन तीनो— सेती लव लागी ॥ध०२॥ सवत् अठारा सालनवासी, शहर, नारनौल मे आई। बडे हर्ष से संजम लीनो, श्री सुन्दर जी गुरणी पाई ॥ ध० ३ ॥ दोनो गुरनी चेली बडी वैरागन तप करवा पर चित कीनो, लुखम-सुखम करे गोचरी, आत्मा को भाडो दीनो ॥ ध० ४॥ धन-धन श्री तपसणजी, जैन धर्म मे हद कीनो, देहतनी जिन ममता त्यागी, जगमाही

शोभालीनी ॥ ध० ५॥ तीन बार तो वेला किया, पांचवार तेला कीना । और उणोदरी तप वहुत किया, समतारुपी रस पीना ॥ ध० ६॥ किया विहार नारनौल सेती, मन अपनो बस में कीनो । श्रावक श्राविका रहा देखता, शहर सिंघाणा को राह लीनो ॥ ध० ७॥ तीन-बार वीस किया, एक वार चौबीस कीना । कई बार तो करी अठाई, समता रुपी रस पीना ॥ ध० ८॥ पंदरा-सोला अठारा अठाई, पचीस व्रत पर चित धारयो । जैन धर्म की महीमा कीनी, आतमसेती मोह टारयो ॥ध० ९॥ एक चौमासा किया कानुंड (महेन्द्र गढ़), तपस्या कीनी अतिभारी । वेले-वेले केयो पारणो, देह तणी ममता त्यागी ॥ ध० १०॥ घणा चौमासा किया सिंघाणे, एकान्तर वास तप किया भारी । बीच माहीं कई किया थोडा, मोपै कही न जावे सारी ॥ ध० ११॥ सतरा व्रत का किया थोकड़ा, चोवीस किया चढ़ते भावे । इस विधि सेती काया शोषी, नाम लिया पातिक जावे ॥ ध० १२॥ सम्बत् उनीसो साल अठारा, शहर दादरी में आई । आवते चौमासे चढ़ते प्रणामें, मास खमण पर चितठाई ॥ ध० १३॥ सावण शुदी पंचमी जानो तपस्या कीनी अतिभारी । भाद्वा शुदी पंचमी की रात को देव दर्शन आया हितकारी ॥ ध० १४ ॥ गुरुनी चेली मोटी सतियाँ, जग माहीं शोभा लीनी । गुण गम्भीर तप जप पंडित, आण वहें वहु नर नारी ॥ ध० १५॥ वर्ष

त्रेसठ जोग शुद्ध पाली, काया को दुर्बल कीनी। श्रोसर जाणकर किया संथारा शूर वीर समता लीनी ॥ ध० १६॥ सम्वत् उनीसो साल इक्यावन, कार्तिक शुदी पंचमी दिन थावर (शनिवार) जाणो । चढते प्रणामे चढ्ते सूरज, किया तीन आहार का पचखाणो ॥ ध० ॥१७ चढ्ते प्रणामे समता लीनी, देह तणी ममता त्यागी। जिनेश्वर देव का धर्म दिपाया, जग मे शोभा लाधी ॥ ध० १८॥ सम्वत् उनीसो साल इक्यावन, कार्तिक शुदी नोमी जाणो । बुधवार ने एक बजासी, किया चार आहार का पचखाणो ॥ ध० १९॥ हाथ मे माला हृदय में ध्यान प्रभु का, मुख से अरिहन्त नाम उचार लिया । कार्तिक शुदी नोमी के दिन, तपसणजी देव लोक गया ॥ ध० २०॥ शहर सिघाणा का श्रावक मिलिया, विमान बनायो अतिभारी । तीन गुमज की करी सजाई, जाको देखन आया नर नारी ॥ ध० २१॥ चार खापका श्रावक मिलिया, विमान बनायो अति भारी । बडी बहार से मजल पहुंचाई, तपसण की जय बोलें नर नारी ॥ ध० २२॥ सम्वत् उनीसो साल बावने, जेठ शुदी नोमी दिन जाणो । सिघाणा माही बड़ा हर्ष से, किया तपसणजी का गुण ग्रामो ॥ ध० २३ ॥ चन्द्रावल गुरनी जी तणे प्रसादे, यह महिमा जुगती जोडी । पोती चेली सोना ने करी पचीसी, मुझ माहे बुद्ध थोडी ॥ ध० २४॥ कलश—तपसण राम कोर महासतियाँ

ध्यान जिनका ध्याइये । गुण ग्राम कर्ता खपे पातिक, मन वंछित फल पाइये । गुणवन्ति तपसण रामकोजी, जैन माहीं जस लहा । जीभा एक अनेक गुण, मो पै न जावे कहा ॥२५॥

(६) श्री चन्दरावलजी—आप का जन्म सिंघाणा शहर राजपूत कुल में हुआ था । आपने विक्रम सं० १९१५ माहशुदी ११ गुरुवार को सिंघाणा में दीक्षा ली और सं० १९५७ ज्येष्ठ शुदी १५ को सिंघाणा में स्वर्गवास हुआ । आपके समय में ही सती सीताजी कुशालीजी हुई

(७) श्री सोनाजी—आपका जन्म प्रजापत कुल में खेतड़ी शहर में हुआ था । आपने सं० १९२९ मंगसिर वदी १२ शनिवार को दीक्षा ली और विक्रम संम्वत् १९५७ भाद्राशुदी ८ को सिंघाणा में स्वर्गवास हुआ ।

(८) श्री गोरांजीमहासती—आप का जन्म ग्राम डावला सं० १९२६ वलदेवदास के घर में हुआ था । आपकी माता केसरा देवीजी थी । आप आचार्य पूज्य श्री रघुनाथ जी म० की छोटी वहन थी । मामा मंगलदास की आज्ञा लेकर आपने खेतड़ी में सं० १९४० पोह वदी ३ शनिवार को लाला जमनादास अर्जुनलाल धुंविलिया के घर पर दीक्षा ली ॥ सम्वत् उन्नीसो चालीस, पोह वदी तीज तिथि आई है, शहर खेतड़ी सोनागुरनी पै, गोरांजी दीक्षा पाई है । आप ने ग्राम नगरों में विचर कर खूब धर्म प्रचार किया, (आपकी शिष्या महान् पवित्र आत्मा सती

श्री पद्मश्री जी है) । आपका स्वर्गवास सं० १९९० चैत्र वदी पचमी मगलवार को शहर सिघाणा में हुआ था।

(९) महान् तपसण गुरनी श्री पद्मश्रीजी महाराज-आपका जन्म सैनिक कुल में स० १९५१ कातिक वदी एकादशी को सिघाणे हुआ था, आपके पिता शिम्भुदयाल और माता का नाम ज्ञानवती था, स० १९५७ आपाढ वदी १० को आप श्री सोनादेवीजी गुरनीश्री गोराजी की पवित्र सेवा मे आई थी और छोटीसी आयु मे ही विक्रम सं० १९६१ फागुन शुदी २ को नारनौल मे सेठ चन्द्रभान छज्जू राम, राम रक्षपाल रामप्रताप नानकचद लक्ष्मीचद केसरीचद मुराना गंधी के घर पर दीक्षा ग्रहन की।

(१०) श्री हितश्री जी—आपका जन्म विक्रम सं० १९७३ सफीदम के पास आंटा ग्राम मे हुआ आपके भाई चौधरी सीतराम आदि है। स० १९८८ मगसिर की अमावस्या को बैरागन बनी आपने सिघाणा मे स० १९९१ ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया सोमवार को दीक्षा ली। आपकी गुरु बहन दादी श्री आनन्द श्री जी है।

(११) श्री फूलश्री जी—आपका जन्म बहादुरगढ स० १९७६ मे पडित (जांगडे ब्राह्मण) प्रभु दयाल के घर हुआ था आपकी माता का नाम लाडो वाई था। आपने अपनी प्यारी गुरुनी श्री पद्मश्री जी हितश्री जी के पास सं० १९९७ बैशाख शुदी १५ मगलवार को सिघाणा शहर में

दीक्षा ली। आपकी आज्ञा कारणी महा विनयवती शिष्या "श्री विनयश्री जी हैं इनका जन्म नारनौल अग्रवाल वंश जैन कुलोत्पन लाला बनशीलाल के घर हुआ था इनकी माता का नाम छिमाबाई था, आपके भाई का नाम पहलाद राय था आपने दादरी में अपने खरचे से सं २००६ पोह वदी सप्तमी (७) सोमवार को दीक्षा ली थी।

दादी श्री आनन्द श्री जी—आपका जन्म खेतडी शहर में हुआ आपके पिता पन्नालाल माता श्यामा देवी आपका भाई गिरधारी लाल रामसरूप भतीजा सियाराम मोतीलाल अग्रवाल सवलू का है सिंघाना में आप के दत्तक पुत्र सागरमल जैन की धर्म पत्नी पारवती (पर्वत देवी) है। आपने सं० २००२ बैशाख वदी ५ को गन्नोर मंडी (रोहतक) में दीक्षा ली थी आप गुरनी श्री पद्मश्री जी की शिष्या वनी।

श्री मगनश्री जी—आपका जन्म सं० २००८ फागुण में श्यामड़ी ग्राम (रोहतक) मित्तल गोत्री लाला शीशराम के घर हुआ था। आपकी माता लाली देवी जैन (मुनशी लाल वनवारीलाल भीमसेन अलीपुर वाले की वहन थी) आपके वड़े भाई महावीर प्रसाद, रघवीरसिंह, घनश्यामदास जैन वड़ी वहन विमला देवी जैन छोटी वहन सन्तोस देवी हैं आपका छोटा भाई विमलकुमार जी कि आनन्द ऋषि जी के नाम से प्रख्यात है इनकी दीक्षा सं० २०२१ फागुण

वदी १० रविवार को हुई थी। मगनश्री जी सं० २०१६ फागुण सुदी १३ को वैरागन बनी घर का नाम मखमली था आपने वैराग्य अवस्था मे सं० २०२३ लुहारी ग्राम के चौमासे मे अठाई करी थी सं० २०२४ ज्येष्ट शुक्ला पूर्णमासी गुरुवार को हथवाला ग्राम मे दीक्षा ली गुरनी श्री पद्मश्री जी महाराज की शिष्या बनी आप अपनी गुरनी जी की खूब सेवा कर रही है।

यह पट्टावली सं० २०२६ ज्येष्ठ कृष्णा द्वितिया आदित्यवार को ता० ४–५–६६ को लिखकर समाप्त की चरखी दादरी मे।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

छप गया ? छप गया ?? छप गया ???

(१) विक्रम सम्वत् २०२७ से २०३० तक का श्री पूज्य मगन सैन जी-जैन तिथि पत्र

(२) आलौकिक रतन प्रकाश (पूज्य श्री रतन-चन्द जी म० का जीवन चरित्र)

(३) श्री जैन ज्ञान-भजन माला

डाक खर्च ५० नये पैसे—मिलने के पते

लाला ताराचन्द श्रीपाल जैन ठिकाना जैन धर्म शाला रघुवर पुरा नं० २ गली नं० ११

मु० पो : गान्धी नगर देहली ३१

(२) लाला सीशराम महावीर प्रसाद जैन बजाज

मु : पो : मोतीपत मंडी तीर्थ बाजार रोहतक रोड

जिला रोहतक

सिद्धि योग-तिथि—१-६-११ को शुक्रवार होवे, २-७-१२ को बुधवार होवे, ३-८-१३ को मंगलवार होवे, ४-६-१४ को शनिवार होवे, ५-१०-१५ को वृहस्पतिवार होवे तो सिद्धि योग होता है। **मृत्यु योग-तिथि**—१-६-११ को रवि या मंगल होवे, २-७-१२ को सोम या शुक्र होवे ३-८-१३ को बुध होवे, ४-६-१४ को गुरु होवे ५-१०-१५ को शनिवार होवे, तो मृत्यु योग होता है। **अमृत सिद्धि योग**-रविवार को हस्त नक्षत्र, सोम को मृग शिरा, मंगल को अश्विनी, बुध को अनुराधा, बृहस्पत को पुष्य, शुक्र को रेवती, शनि को रोहिणी नक्षत्र होवे तो अमृत सिद्ध योग होता है। यह योग सर्व योगों से अच्छा है। **रवि योग**—सूर्य नक्षत्र से वर्तमान दिन के नक्षत्र तक गिनले, गिनती करने पर क्रम संख्या ४-६-८-१०-१३-२० होवे तो उस दिन रवि योग होता है। **तिथि वार नक्षत्र से मृत्यु योग**—रविवार को अनुराधा नक्षत्र होवे, सोम को उत्तराषाढा, मंगल को शत-भिषा, वुध को अश्विनी, वृहस्पत को मृगशिरा, शुक्र को हस्त नक्षत्र हो तो मृत्यु योग होता है। **दिशाशूल**—सोम शनि को पूर्व में, रवि शुक्र को पश्चिम में, मंगल वुध को

उत्तर में, वृहस्पतवार को दक्षिण में दिशाशूल होता है। **कुलक योग**—तिथि १ को शनि, २ को शुक्र, ३ को गुरु, ४ को बुध, ५ को मगल, ६ को सोम, ७ को शनिवार हो तो कुलक योग होता है इस योग मे शुभ कार्य नही करना चाहिए। **छोड़ने योग तिथ**—ज्येष्ठ की १ आषाढ़ की २, श्रावण को ३, भाद्वा की ४, आशोज की ५, कार्कि की ६, मगशिर की ७, पोह की ८ माह की ६, फागुन की १०, चैत्र की ११, वैशाख की १२ ॥

स्वर विचार—दहिने स्वर मे भोजन खावे, वाये पीवे नीर। वायी करवट सोवता, रहे निरोग शरीर ॥१॥ **छींक विचार**—छीक पीठ की कुशल उचारे, वायी छीक कारज सब सारे। सम्मुख छीक लड़ाई भाषै, छीक दाहिनी द्रव्य विनाशे। ऊची छीक कही जयकारी, नीची छीक होय भय भारी। अपनी छीक महा दुख दाई, ऐसे छीक विचारो भाई। छीकत खाइये, छीकत पीइये, छीकत रहिए सोय। चीकत पर घर मत जाइए, तुरन्त लड़ाई होय। एक नाक दो छीक, काम वने सब ठीक। मृग वाये से दाहिने, जो आवै तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी मिले, चले जो प्रातः काल। **सब कामों में वर्जित ज्वालामुखी योग**—तिथि एकम को मूल नक्षत्र होवे पचमी को भरणी होवे, अष्टमी को कृतिका होवे, नोमी को रोहिणी, दशमी को अश्लेखा नक्षत्र होवे तो ज्वाला मुखी योग होता है। **चन्द्रमा का बास**—मेष सिह धन का

चन्द्रमा पूर्व दिशा में, वृष कन्या मकर का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में, मिथुन तुला कुम्भ का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में, कर्क वृश्चिक मीन का चन्दमा उत्तर दिशा में। गमन के समय सन्मुख चन्द्रमा लाभदायक होता है, दाहिने हाथ का चन्द्रमा सुख सम्पत्ति दाता। वायें हाथ का चन्द्रमा धन हानि करता है, पीठ पीछे का चन्द्रमा मृत्यु करता है। **दिशाओं में वर्जित नक्षत्र**—जिस दिन रोहिणी नक्षत्र हो उस दिन पूर्व में न जावे, श्रवण नक्षत्र में पश्चिम में न जावे, चित्रा नक्षत्र में दक्षिण में न जावे, हस्त नक्षत्र हो उस दिन उत्तर दिशा में न जावे। **किस दिशा में कौन सा वार लाभदायक होता है**—मंगल या बुधवार को पूर्व दिशा में जावे, सोमवार या शनिवार को दक्षिण में जावे, गुरुवार को पश्चिम में जावे, रवि या शुक्रवार को उत्तर दिशा में जाने से धन-धान्यादि का लाभ होता है।

घात चन्द्रमा आदि का विचार—मेष राशि वालों को जन्म का चन्द्रमा, वार रवि, महीना कार्तिक का, तिथि १-६-११ घातिक होती हैं। वृष राशि वालों को पांचवां 'चन्द्रमा, वार शनि, महीना, मंगसिर का, तिथि ५-१०-१५ घातिक होती हैं। मिथुन राशि वालों को नौवां चन्द्रमा, वार सोम, महीना आषाढ़ का, तिथि २-७-१२ घातिक होती हैं। कर्क राशि वालों को दूसरा चन्द्रमा, वार बुध, महीना पोह का, तिथि १-६-११ घातिक होती हैं। सिह राशि वालों

को नौवा चन्द्रमा, वार शनि, महीना ज्येष्ठ का, तिथि ३-८-१३ घातिक होती है। कन्या राशि वालों को दसवाँ चन्द्रमा, वार शनि,महीना भाद्वा, तिथि ५-१०-१५ घातिक होती है। तुला राशि वालो को तीसरा चन्द्रमा, वार बृहस्पत, महीना माह का, तिथि ४-९-१४ घातिक होती है। वृश्चिक राशि वालों को सातवा चन्द्रमा, वार शुक्र, महीना आशोज का, तिथि १-६-११ घातिक होती है। धन राशि वालो को चौथा चंद्रमा, वार शुक्र, महीना श्रावण का, तिथि ३-८-१३ घातिक होती है। मकर राशि वालो को आठवां चंद्रमा, वार मगल, महीना वैशाख का, तिथि ४-९-१४ घातिक होती है। कुम्भ राशि वालो को ग्यारहवा चद्रमा, वार बृहस्पत, महीना चैत्र का, तिथि ३-८-१३ घातिक होती है। मीन राशि वालों को बारहवा चद्रमा, वार शुक्र, महीना फागुन का तिथि ५-१०-१५ घातिक होती है।

लेखक—रामकुमार जैन सब्जी मण्डी देहली

मेघ माला विचार—जो तिथि टूटे चाँदनी, होय नक्षत्र की हान। के छत्र का डाडा टूटे, के कन महेगा जान। पोह वदी मावस को, रवि शनि मगल होय, दुगणा तिगुणा चौगुणा, नाज विकंता जोय। चन्द्र शुक्र गुरु मंगल शनि, होवे धनुष इन वार। दिन चौथे या पाँचवें, बरसे मूसलधार। रात को बोले काग जो, दिन को बोले स्याल (गिदड़) छत्र डिगे अन्न सग्रह करो, पड़े अचिंता काल। मीन का शनि कर्क का गुरु,

तुल का मंगल होय । गेहूँ रस और गुड़ को, विरला चाखे कोय । जिस वार की संक्रान्ति लगे, उसही वार की मावस होय । खप्पर फिरावे योगिनी, अन्न जो महेंगा होय (पोह बदी १ को बुधवार होवे तो अन्न में चार गुणा लाभ होवे) जिस पक्ष में तिथि वढ़े, उस पक्ष में ही घट जाय । सहदेव कहे सुन भडली, अन्न तेज कराय । जिस पक्ष में तिथि घटे, उस ही पक्ष में तिथि वढ़ जाय । सहदेव कहे सुन भडली, अन्न मंदा हो जाय । चैत्र बदी त्रयोदशी, जो शनिवार होय संक्रान्ति लगे मीन की, तेज धान्य झट होय । वैसाख शुदी अष्टमी, जो होवे शनिवार । काल पड़े या राजा कोई, जावे स्वर्ग सिधार । ज्येष्ठ शुदी तीज को, आद्रा नक्षत्र जान । उस दिन जो मेह वरसे, दुर्भिक्ष जान महान । आषाढ़ सुदी नोमी को, जो अनुराधा नक्षत्र होय । वार शनिश्चर आपड़े काल हलाहल जोय । आषाढ सुदी १४ को, ज्येष्ठा नक्षत्र जान । महेंगा होवे धान्य का, ज्योतिषी लेओ पिछान— श्रावण वदी तेरस दिन, रोहिणी नक्षत्र जान । या सावण बदी ११ गर्जे मेघ आधी रात, निश्चय काल वखान—भाद्रा शुदी नौमी को वरसे, महँगा अन्न पिछान । जो वरसे एकादसी, तो फल श्रेष्ठ बखान—कार्तिक शुदी पँचमी, मूल नक्षत्र जो होय, खप्पर हाथों लिए भ्रमे, भीख न घाले कोय । कार्तिक शुदी पुनम, अश्विनी नक्षत्र भान । थोड़ा उपजे धान तृण, मध्यम वर्षा जान—मंगसिर मावस क्रूर जो वार, अल्प

मेघ और देश विडार । महेगा होवे ज्वार अनाज, किसानों का बिगडे काज—माह बदी नौमी तिथि, रविवार पुष्य नक्षत्र जान । अन्न लाभ हो चौगुणा, निश्चय दिल में मान ।



मुनि श्री खुशहाल चन्द्र जी महाराज

गुरु तेरे चरनो मे, बार बार प्रणाम ।।टेक।।

स्वामी खुशहाल चन्द जी हैं बड़ भागी, जैन धर्म के है अनुरागी
तारन तरन जहाज, गुरु तेरे चरनों मे बार बार प्रणाम ।।१।।
गुरुजी हैं पर उपकारी, चेला आनन्द आज्ञा कारी ।
जाने सब नर नार, गुरु तेरे चरनों मे बार बार प्रणाम ।।२।।
जैन धर्म का नाद बजाया मुक्ति का मार्ग दर्शाया ।
शास्त्र के अनुसार, गुरु तेरे चरनों में बार बार प्रणाम ।।३।।
सत्य धर्म का ज्ञान सुनाया, जिन वाणी का मेह वर्षाया ।
किया धर्म प्रचार, गुरु तेरे चरनों मे बार बार प्रणाम ।।४।।
इसराना के जैनी भाइयो, उपकार गुरु का भूल न जाइयो ।
महिमा अपरम पार, गुरु तेरे चरनों मे बार बार प्रणाम ।।५।।
प्रीतमदास ने भजन बनाया, पानीपत से आके सुनाया ।
खुशी हुए नर नार, गुरु तेरे चरनों में बार बार प्रणाम ।
गुरु तेरे चरनो में, बार बार प्रणाम ।

मु: पो० इसराना जिला करनाल तहसील पानीपत
लाला गोरधनदास हरीचन्द जैन

नरेन्द्र कम्पोजिग एजेन्सी द्वारा शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस मे मुद्रित